Chapter-5

पंचम अध्याय

कुमाऊँ की लोक कथाएँ

पंचम अध्याय

कुमाऊँ की लोककथाएँ

लोककथाओं की परंपरा अत्यंत पुरानी है। यह निम्न प्रकार की होती है। पशुपक्षी संबंधी, व्रतसंबंधी, नितिसंबंधी, धर्मसंबंधी, प्रकृति संबंधी, बाल कथाएँ, हास्य कथाएँ, आदि।

(१) इसमें पशु – पक्षियों के बारे में लोग जो कथाएँ कहते है वह निश्चित होती है कि कौन सा पक्षी कैसा है? यदि वह ऐसा है तो क्यों है? यह उनको कथाओं के माध्यम से कहते है। यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जाती रहती है।

इनमें शिक्षा, अच्छी बातें, लोक – व्यवहार आदि देखने को मिलता है। इसमें शियार की चतुराई, कौवे की कथाएँ, चिडिया की कथाएँ आदि देख सकते है। जैसे एक पक्षी काफल पाको की आवाज करता है। उसी प्रकार से पक्षियों की बोली की लोककथाएँ प्रचलित है।

इसी प्रकार से व्रत से संबंधित कथाएँ भी है जैसे रामनवमी, नवरात्री, बैकुंठ चर्तुदशी, शिवरात्री, उत्तरायण, गणेश चतुर्थी, जन्माष्टमी, दुर्गाष्टमी, हरकाली, वटसावित्री, संतोषीमाता, सोमवार व्रत, सत्यनारायण व्रत, पूनम, आदि।

भूतप्रेत संबंधी कथाएँ भी होती है जो बिना इच्छा पूरी हुए मृत्यु को प्राप्त हुए है उनकी कथाएँ भी है। जो दूसरो का अहित करने आती है।

सरु – नरु की कथा, भैंस, सियार, कुत्ता, दैत्य, बुढिया का नाती, जटाधारी, राक्षस, ताल का दैत्य गधेरे का भूत, पेड का भूत, पहाडी का भूत, बिल्ली, आदि कथाएँ जो लोग बडी निष्ठा से कहते तथा उनको मानते है। धर्मसे संबंधित कथाएँ

स्थानिक देवी – देवता और पुराणो पर आधारित है। जैसे कि जागेश्वर, बैजनाथ, चित्रशिला, बागेश्वर, नैनादेवी, गडदेवी, गंगनाथ, भीम, जागनाथ, भगवती, हरकाली आदि।

संतो की सोमबरी महाराज, नीमकरैली बाबा, हैडाखान बाबा आदि। हास्य, मनोरंजन की कथाओं में लैछी कोठाटिक च्याल, झुसी मुसी की कथा आदि है तथा इसके साथ साथ चमत्कार, चुटकुले, काल्पनिक गाने, आदि भी कुमाऊँ में प्रचलित है। नीतिपटक कथाओं मे नीति तथा उपदेश की प्रधानता रहती है। जैसे कि ''मरी पितर आब कसै नि लौटन सरादक बिराऊ'' आदि।

इनमें सामाजिक जीवन के लिए नैतिकता का संदेश दिया जाता है। प्रकृति से संबंधित कथाएँ है जिसमें अलग अलग पेड़ की कथाएँ कही गयी है। जो नदी, पहाड़, झरने, पत्थर, फूल, पेड़ – पौंधो की कथा कहते हैं।

जैसे कि बाँज, देवुदार, पीपल, तिमुल के पेड़, बुराश, प्यौली, भितर के फूल, चश्मा, काली, गोटी, गगील, नदियाँ, देवदार, बदरी, दिमाल, नीलकंठ वगैरह।

खकरमुन

एक जंगल में एक बकरी चरने के लिए गई बकरी गर्भवती थी तभी एक बाघिन की नजर उस पर पडी संयोगवश वह बाघिन भी गर्भवती थी इस कारण वह जल्दी से अपना शिकार नही पकड पा रही थी। बाघिन ने सोचा यह शिकार मेरे हाथ लग सकता है। उसने बकरी का पीछा किया, लेकिन बकरी की नजर उस पर पड गयी, और बकरी भाग कर एक गुफा में जा छुपी जिसमें बाघिन नहीं घुस सकती थी। बाघिन गुफा के उपर बैठ गई और बकरी के बाहर आने का इन्तजार करने लगी लेकिन बकरी को यह महसूस हो गया था कि बाघिन गुफा के ऊपर बैठी हुई है।

बकरी को गुफा के अन्दर पेट भरने के लिए पर्याप्त घास उपलब्ध थी समय बीतने पर बकरी की तीन और बाघिन की दो सन्तानें हुई बकरी की तीन सन्तानों में एक नर व दो मादा सन्तानें थी जिस में नर का नाम उसने खकरमुन तथा मादा सन्तानों का नाम खातडी तथा गुदडी रखा।

बकरी तो गुफा के अन्दर ही अपना पेट भर लेती लेकिन बाघिन भूख से व्याकुल होने लगी एक दिन बाघिन ने बकरी सहित बच्चों को खाने की योजना बनाई। बाघिन ने गुफा के ऊपर से ही बकरी को आवाज लगाई और कहा में यहाँ पर बिलकुल अकेली हूँ अतः तुम में से कोई भी हमारा साथ देने आ जाओ। बकरी उसकी चालाकी समझ गई और अपने बच्चों को भी उस खतरे के बारे में आगाह किया लेकिन खकरमुन ने कहा माँ यदि इस बाघिन ने हमारा बुरा सोचा है तो उसका फल उसी को भुगतना होगा तू चिन्ता मत कर मैं जाती हूँ। अँधेरा होते ही वह गुफा के ऊपर चला गया और बाघिन के सामने आते ही उसको नमस्ते किया और कहा कि आज रात मैं आपका साथ करने आया हूँ। बाघिन ने मन में सारी योजना बना रखी थी इसलिए उसने सोते वक्त अपने बच्चों को पीठ की तरफ व खकरमुन को मुँह के पास सुला दिया ताकी उसकी आँख लगते ही वह उसे चट कर जाय लेकिन बाघिन विचारों में डुबी ही थी कि उसको झपकी आ गई मौका देखकर खकरमुन ने बाघिन के एक बच्चे को अपनी जगह व खुद उसकी जगह जा कर सो गया रात में जब बाघिन की आँख खुली तो रात की वजह से वह पहचान न पाई और उसने खुद इतनी फूर्ती से अपने बच्चे को दबोचा कि उसकी चीख तक न निकलने पाए इस प्रकार वह अपने बच्चे को ही खा गई और चैन की नींद सो गई तब खकरमुन उठा और बाघिन के मुँह के पास जाकर सो गया। सुबह जब बाघिन उठी तो उसे लगा कि रात में उसने नींद में

ही अपनी स्थिति बदली होगी इसलिए वह अपने ही बच्चे को मार बैठी है। और अपना दु:ख छिपाते हुए बोली कि रात में कोई जानवर मेरे बच्चे को उठा ले गया।

दूसरे दिन रात मे साथ करने के लिए उसने बकरी को फिर आवाज लगाई आज भी खकरमुन ही गया और फिर वही हुआ। बाघिन इसी तरह से अपने व बकरी के बच्चों को सुलाकर सो गई। खकरमुन ने फिर वैसा ही किया और बाघिन अपना दूसरा बच्चा भी गवाँ बैठी, लेकिन सुबह उठकर उसको सब समझ आ गया लेकिन आज भी जानवरों को उसने यही बताया कि कोई जानवर आज उसका दूसरा बच्चा भी ले गया। लेकिन मन ही मन उसने बकरी के पूरे परिवार को खत्म करने का निश्चय किया।

अगले दिन रात में उसने फिर साथ के लिए आवाज़ लगाई तो बकरी ने खकरमुन को समझाया कि वहाँ कोई जानवर है जो बाघिन के दोनों बच्चों को खा गया है इसलिए अब तू वहाँ मत जा लेकिन वो तो अब बाघिन को सबक सिखाना चाहता था। रात में बाघिन ने उसे पहाडी की तरफ सुला दिया और स्वयं उसकी पीठ की तरफ सो गई उसने निश्चय किया कि आज तो मैं इसे अवश्य खा जाऊँगी। जैसे ही बाघिन को झपकी आयी खकरमुन उसकी पीछ की तरफ जा कर सो गया और बोला ताई मेरा हाथ आपके नीचे दबा है थोडा उधर खिसको जैसे ही बाघिन नींद में खिसकी वह पहाडी से नीचे गिर गई। और बकरी निश्चिंत होकर अपने घर वापस अपने बच्चों के साथ आ गई। खकरमुन की चतुराई के कारण चारों की जान बच गई।

सार :

इसमें दो पशुओं की कथा बतायी गयी है कि किस प्रकार से बाघिन अपने बच्चों का पेट भरने के लिए बकरी तथा उसके बच्चों का शिकार करने की तरकीब सोचती रहती है तथा उसी तरकीब की वजह से वह अपने बच्चों को खा जाती है।

क्योंकि बकरी का बच्चा इतना होशियार होता है कि वह उसके ही बच्चों को उसका शिकार बना देता है।

यदि कहा जाय तो इसमें जानवरों के परिवार की कथा है कि वह अपना जीवन किस प्रकार गुजारते हैं इसमें सामाजिक परिवेश बताया गया है कि जानवरों को भी जिंदा रहने के लिए कितने कष्ट सहन करने पड़ते हैं।

कलविष्ट

एक गाँव में रमौती नाम की एक युवती रहती थी उसके एक पुत्र था उसका नाम कल्याणसिंह विष्ट था। कल्याणसिंह बहुत ह्रष्ट – पृष्ट युवक था। उसकी दिनचर्या गाय – भैंसो को चराने की रहती थी। गाँव में ही कल्याणसिंह के मामा रहते थे। उनके कई पुत्र थे, गलती से एक दिन कल्याणसिंह की गाय – भैंसे उसके मामा के खेतों में चली गयी और काफी फसल को नुकसान पहुँचा दिया। इसी बात को लेकर कल्याणसिंह और उसके मामा के लड़को के बीच कहा – सुनी हो गयी, युँकि वे लोग संख्या में ज्यादा थे अतः उन्होनें कल्याणसिंह को मारकर एक गढ्ढे में दबा दिया।

उसकी माँ काफी परेशान हो गई शाम होने को आई न तो उसके जानवर न तो वो घर लौटे। माँ काफी विलाप करने लगी विलाप करते उसे झपकी आ गई, कल्याणसिंह तुरन्त माँ के स्वप्न में आ गया और उसने माँ को सारी कहानी सुनाई और कहा माँ तू मुझे अपना दूध पिला तो मैं फिर जीवित हो जाऊँगा माँ ने ऐसा ही

किया ऐसा करते ही कल्याणसिंह जीवित हो गया व पूरी ताकत लगाकर गड्ढे से बाहर आ गया बाहर आने पर उसने देखा कि उसके पशु पास में ही उसका इन्तजार कर रहे है। वह अब पशुओं को लेकर वापस घर आ गया।

कल्याणसिंह को जोगियों से बडी ईर्ष्या थी वह कई जोगियों को मौत के घाट उतार चुका था एक दिन गोरखनाथ (एक ईश्वरीय रुप) को उसके बारे में पता चला तो वो उसकी परीक्षा लेने उसके घर चले गये। शाम को कल्याणसिंह जब अपने पशुओं को चराकर वापस आ रहा था तो साधु रुप में गोरखनाथ उसके घर के बाहर बैठ गये। अपनी देहरी में जोगी को बैठा देख कल्याणसिंह का खून खौल गया वह कुल्हाडी लेकर जोगी की और बढ़ा तभी गोरखनाथ ने भभूत की एक फूँक उसकी ओर मारी और उसका क्रोध शान्त हो गया।

उसके पशु गौशाला की ओर चल दिये उनके पीछे गोरखनाथ भी चल दिये यह देख कल्याणसिंह को फिर गुस्सा आया वो अपनी माँ से बोला – माँ ये जोगी गौशाला की तरफ चला गया है इसे देख मेरे जानवर परेशान होंगे मैं जानवरों को बाँधकर इसे वहीं मार दूँगा, लेकिन जब वह गौशाला पहुँचा तो देखा कि सभी जानवर अपने स्थान पर आराम से खड़े हो गये है और वह साधु उनके बीच बैठा मुस्करा रहा है। उसे लग रहा था कि आज इस जोगी को देख जानवरो ने गौशाला में उत्पात मचा रखा होगा लेकिन ये सब तो शान्त भाव से अपने स्थान पर खडे है। उसे यह समझते देर न लगी कि यह जोगी कोई सिध्ध पुरुष है।

तब वह गोरखनाथजी से बोला जोगी तुम्हें देखकर में क्रोधित होता हूँ लेकिन तुम्हारे पास आने तक मेरा क्रोध शान्त हो जाता है। तुम्हें मुझसे क्या चाहिए मेरे पास देने को सिर्फ जानवर ही है।

गोरखनाथजी बोले कि मुझे तुमसे कुछ नहीं चाहिए तुम सिर्फ मेरा ये खप्पर (जोगियों का एक छोटा सा पात्र) दही से भर दो। उसने अपनी माँ से कहा माँ जोगी का यह पात्र दही से भर दे। उसकी माँ एक एक कर घर के सभी बर्तन जिनमें दही रखा था लाती जाती व उन्हें जोगी के खप्पर में डालती जाती पर वह खप्पर था कि भरने का नाम ही नहीं ले रहा था। जब सब बर्तन खाली हो गये और जोगी का खप्पर फिर भी नहीं भरा तो वह समझ गया कि यह कोई अवतारी जोगी है जो मेरी परीक्षा ले रहा है। अतः कल्याणसिंह घुटने टेक कर जोगी के चरणों में झुक गया और उनसे क्षमा माँगने लगा।

गुरु गोरखनाथ ने उन्हें अपना शिष्य बना दिया। वही कल्याणसिंह विष्ट आज भी 'कलविष्ट', 'कलुवावीर' आदि नामों से कुमाऊँ में देव रुप में पूजनीय है।

सार :

इस कथा के माध्यम से यह बताने की चेष्टा की गई है कि जिस व्यक्ति का भगवान पर भरोसा नहीं होता है परन्तु भगवान अपने बन्दों का ध्यान रखता है तथा उनको जीवन के सही मार्ग पर लाने के लिए उनकी परीक्षा लेता है।

इस कथा में भी भगवान गोरखनाथ कलुवा व्यक्ति की परीक्षा लेने आते हैं तथा उसका अभिमान तोडकर उसे सच्चा मार्ग दिखाते हैं। तथा हमेशा के लिए उसे अमर करके अन्तर्ध्यान हो जाते हैं।

राजा विक्रमादित्य

एक गाँव में एक ब्राह्मण और उसकी पत्नी रहते थे वे बहुत गरीब थे उनके पास सर ढ़ँकने को छत व पहनने को वस्त्र न थे पास के ही गाँव में राजा विक्रमादित्य का राज्य था, वह बहुत ही दानी व कृपालू था, उसके यहाँ से कोई भी याचक खाली

हाथ नहीं लौटता था वह भगवान विष्णु की पूजा अपने ज्ञान को बढाने के लिए करता था। इसलिए शनि उससे क्रुद्ध रहते थे। किन्तु विष्णु की कृपा से वह उनका कुछ भी बिगाड़ नहीं पाते थे।

एक दिन ब्राह्मण की पत्नी ने ब्राह्मण से कहा कि आप राजा विक्रमादित्य के पास जाकर उनको अपनी व्यथा कहिए वे आपको निराश नहीं करेंगे। पत्नी की ज़िद करने पर ब्राह्मण राजा से मिलने चला गया । जब गरीब ब्राह्मण राजा के दरबार में पहुँचा तो राजा ने उसके चरण धोकर अच्छे वस्त्र पहनाए तथा खूब आदर सत्कार किया। तथा बहुत सारा धन देकर उसे विदा किया।

ब्राह्मण पर शनि और मंगल की दशा चल रही थी यही कारण था कि वह दरिद्र से दरिद्रतर होता जा रहा था। उस दिन भी जब वह धन लेकर वापस जा रहा था तो रास्ते में सुमसाम जगह पर शनि और मंगल ने राजा और मंत्री का रुप धारण कर उससे सारा धन वापस ले लिया।

वह खाली हाथ घर लौट आया लेकिन उसने अपनी पत्नी से कुछ न कहा। पत्नी को लगा कि उसने राजा के आगे संकोच किया होगा। इसलिए दूसरे दिन उसने ब्राह्मण को फिर राजा के पास भेजा, राजा ने दोबारा उसे धन देकर विदा किया और रास्ते में उसके साथ फिर वही हुआ। इस प्रकार वह तीन चार बार राजा के यहाँ से धन लेकर आता रास्ते में राजा व मंत्री के वेश में शनि व मंगल उससे धन ले लेते थे।

पाँचवी बार जब वह राजा के पास गया तो राजा को उसकी नियत अच्छी नहीं लगी। राजा ने उसे धन तो दिया लेकिन पूछा कि ब्राह्मण मैं तुम्हें इतना धन दे चुका हूँ तुम इस धन का करते क्या हो?

ब्राह्मण सारी बातों से अनजान था। वह यही सोच रहा था राजा लोगों में प्रसिद्धि पाने के लिए सबके सामने दान – पुण्य देता है व अकेले पाकर वही वापस ले लेता है । राजा के प्रश्न करते ही ब्राह्मण बोल पड़ा राजन आप मुझसे पूछ रहे हैं कि में क्या करता हूँ? सारी प्रजा को दिखाने के लिए आप सबके सामने दान करते हैं व फिर एकान्त पाते ही उसे छीन लेते हैं। ब्राह्मण की बातें सुनकर राजा सोच में पड़ गया। लेकिन उन्होंने उससे बिना कुछ और पूछे उसे धन देकर विदा किया।

ब्राह्मण का सच जानने के लिए राजा स्वयं भी वेष बदलकर उसके पीछे चल दिये। रास्ते में जब शनि व मंगल ब्राह्मण से धन लूट रहे थे तो राजा उनके समीप आ गये और बोले महाराज आप कौन है? और इस गरीब ब्राह्मण को क्यों लूट रहे हैं। राजा को देखते ही शनि व मंगल अपने वास्तविक रुप में आ गये और बोले ये सब हमारी दशा के प्रभाव से हो रहा है। राजा ने शनि व मंगल से कहा आप इस निर्धन ब्राह्मण को छोड़ दें व इसके बदले मुझे जो सजा देनी हो दे दें। उसी वक्त दोनों ने ब्राह्मण का सारा माल वापस कर दिया। अब वो दशा राजा पर लग गई और दोनों राजा के साथ चल दिये।

चलते चलते राजा ने कहा महाराज आपको जो चाहिए ले लीजिए लेकिन मुझे अपने से मुक्त करो इतना सुनते ही शनि, मंगल ने राजा के हाथ पैर काट दिये व धड़ वहीं फेंक वो चल दिये।

सुबह जब एक तेली तेल बेचने जा रहा था तो उसकी नजर उस धड़ पर पड़ी जो बिना हाथ पाँव के कराह रहा था। उसने बर्तन में से थोड़ा तेल निकाल कर उसके घाव पर डाल दिया और चल दिया उस दिन उसकी अच्छी कमाई हो गई अब वह रोज जाते समय उसके घावों पर तेल डालता और कुछ भोजन उसे दे देता उसके इस

पुण्य कार्य से उसकी कमाई भी अच्छी होती थी और धीरे राजा भी घाव मुक्त हो गया।

एक दिन तेली राजा को घर ले आया घर पर राजा तेली के तेल पिरोने के काम में उसकी मदद करता था। वह उसके बैलों को हाँकता था। तेली का व्यापार बढ़ने लगा धीरे वह धनाढ्य लोगों में गिना जाने लगा। उधर राजा के कई दिन राज्य में न आने से नया राजा नियुक्त कर लिया गया। एक बार तेली को किसी राज्य के राजा की पुत्री के स्वयंवर में बुलावा आया तो राजा बोला कि आप मुझे भी अपने साथ ले चलिए मैं घर में बैठा बोर हो गया हूँ। तेली ने उसकी बात मान ली लेकिन वहाँ जाने पर उसे लगा कि ठूँठ व्यक्ति के ऐसे मौके पर जाने से राजा को कुछ अशुभ न लगे इसलिए उसने उन्हें महल के बाहर कुछ दूरी पर उतार दिया।

उधर स्वयंवर में एक शर्त थी कि एक माला एक हाथी को दी जाएगी, हाथी जिसके गले में भी वह माला डालेगा उसी से राजकुमारी का विवाह किया जाएगा।

स्वयंवर का जश्न शुरु हुआ माला हाथी को दी गई हाथी ने माला उछाली और वह जाकर बिना हाथ – पाँव वाले उस व्यक्ति के गले में गिर गई राजा ने जब यह देखा तो उसने उस ठुँठ व्यक्ति को कुछ और दूर फिकवा दिया। फिर हाथी को माला दी गई इस बार भी माला उछालने पर वह उसी ठुँठ व्यक्ति के गले में गिरी तीसरी बार भी ऐसा ही हुआ यह चमत्कार देख राजा की पुत्री बोली महाराज में इस ठुँठ के साथ ही विवाह करुँगी, ठुँठ को आदर के साथ लाया गया व राजा ने उसे अपना दामाद स्वीकार किया व उसे आधा राज्य दे दिया।

एक दिन की बात है कि करनी, करतूत, भाग्य और आशा राजा के पास पहुँचे और बोले महाराज न्याय करके बताइये कि हममे सबसे बड़ा कौन है? राजा

असमंजस की स्थिति में पड़ गया, उसने लोगों से इस समस्या का हल पूछा लेकिन कोई नतीजा न निकला धीरे यह बात ठुँठ के कानों में पड़ी उसने कहा कि उन चारों को मेरे पास भेज दो। चारो ठुँठ के पास आये।

सर्वप्रथम करनी ठुँठ के पास आयी और अपना शक्ति प्रदर्शन करते हुए बोली महाराज में आपके शरीर का एक हिस्सा आपको फिर से दे सकती हूँ ऐसा कहकर उसने ठूँठ की एक टाँग जोड दी। ठुँठ ने करनी से कहा ''मैंने अपने जीवन में सब कुछ किया फिर भी मेरी यह हालत है इसलिए तुम बड़ी नहीं हो सकती''। इसके बाद करतूत आयी और बोली पैर तो में भी जोड़ सकती हूँ यह कहकर उसने उसकी दूसरी टाँग भी जोड़ दी। राजा बोला ''मैंने अपने योग्य सब कुछ किया फिर भी मैं इस हाल में हूँ इसलिए तू भी बड़ी नहीं हो सकती।'' फिर भाग्य राजा के पास आया और बोला महाराज मैं आपका एक हाथ जोड़ सकता हूँ यह कहकर उसने राजा का हाथ जोड़ दिया, उस पर राजा बोला ''कि मैं राजकुल में पैदा हुआ ये मेरे भाग्य को दर्शाता है लेकिन बिना अपराध किये मैं आज ऐसा जीवन जी रहा हूँ। अतः भाग्य बड़ा कैसे हो सकता है।''

अन्त में आशा राजा के पास आई और बोली राजन मनुष्य हर काम आशान्वित होकर ही करता है यदि उसे किसी कार्य को करके लाभ या सन्तुष्टि की आशा न हो तो वह कार्य करेगा ही क्यूँ? यह कहकर उसने राजा का दूसरा हाथ भी जोड़ दिया। इस तरह राजा फिर से एक स्वस्थ मनुष्य हो गया।

राजा ने न्याय सुनाते हुए सबसे कहा कि जब मेरे हाथ – पैर कट गये थे तब भी मैं ठीक होने की आशा में जी रहा था। आशा न होती तो मेरा प्राणान्त हो गया होता आशा ने ही मुझे जीवित रखा है। राजा का न्याय सुनकर सब अत्यन्त प्रसन्न

हुए फिर उन्होंने अपने श्वसुर का राज्य उन्हें वापस कर अपनी पत्नी, तेली व उसके परीवार के साथ अपनी राजधानी लौट गये व पुनः विक्रमादित्य के आसन पर बैठे।

सार :

इस कथा द्वारा शनि भगवान का प्रकोप तथा उनका दोष जिस पर लग जाता है वह राजा भी रंक बन जाता है। यह बताने की चेष्टा की है तथा राजा विक्रमादित्य बहुत दानी राजा था। एक ब्राह्मण को रोज बहुत सारा धन देता है मगर शनि दशा होने से वह धन उससे शनि भगवान लूट लेते हैं। एक दिन राजा खुद ब्राह्मण के पीछे जाते हैं तो शनि को उनके वेश में देख लेते हैं और उनसे विनती करते है कि आप इस गरीब ब्राह्मण की परीक्षा न लेकर मुझसे सारा धन ले लिजिए तथा इसकी दशा मुझ पर डाल दिजिए।

बिरुड़ पंचमी और सातूँ – आठूँ

एक था बिणभार उसके सात पुत्र थे। उसकी सबसे छोटी पुत्रवधु काफी गरीब परिवार से थी। इसलिए कोई उसके साथ सामान्य व्यवहार नहीं करता था। सब उससे घर में नौकरानी की तरह वर्ताव करते थे। बिणभार के सातों पुत्रों में से किसी को भी सन्तान न थी इसलिए वह काफी उदास रहने लगा, उसका मन घर में बच्चे की चाहत के लिए मचलता था।

एक दिन वह यमुना किनारे प्रातःकाल टहल रहा था तो उसने देखा कि कुछ स्त्रियाँ बर्तनों में कुछ धो रही है उसने उनसे पुछा कि आप लोग ये क्या धो रही हो और क्यों? स्त्रियों ने कहा कि आज बिरुण पंचमी है अतः हम बिरूण धो रही है। इससे निःसन्तान को सन्तान प्राप्ति होती है। बिणभार बोला इसके बारे में मुझे विस्तार से बताओ।

स्त्रियों ने कहा भादो मास की पंचमी को सुहागिन स्त्रियाँ सुबह उठकर नहा – धोकर घर को गाय के गोबर व मिट्टी से लिपती हैं तथा घर के चारों कोनों में दीपक जलाकर बिना मुँह धोए पाँच प्रकार का अनाज जो सहजता से उपलब्ध हो जाए (जैसे गेहुँ, चना, मक्का, मटर, उरद आदि) उन्हें ताँबे की पतीली में भिगोकर रख दिया जाता है (यह अनाज भिगोना ही बिरूण भिगौना कहलाता है) बिरुण के साथ ही एक पोटली में सरसों, हल्दी व सुपारी बाँधकर डाल दी जाती है। इसके पश्चात् प्रतिदिन की तरह ही भोजन किया जाता है।

बिरुण भिगोने के एक दिन बाद स्त्रियाँ सात और आठ का व्रत करती है, सात के दिन गौरों को मायेके लाया जाता है। इसके लिए महिलाएँ खेतों में जाकर पाँच प्रकार के अनाज को काटकर एक टोकरी में रखकर उस टोकरी को सिर मे उठाये हुए मंगल गीत गाती हुई घर आती है। घर आकर मिट्टी से गौरा देवी की प्रतिमा बनाकर सजाती है। और अपनी सन्तानों की दीर्घायु की कामना करते हुए अपनी बाँह में रक्षाडोर बाँधती है।

इस तरह आठ के दिन महेश्वर की प्रतिमा बनाकर गौरा व महेश्वर का विवाह किया जाता है। और स्त्रियाँ पूजा की डोर (दुबडा) गले में बाँधती है। इस तरह यह व्रत सम्पन्न हो जाता है।

सात दिन बाद महेश व गौरा को किसी जलाशय में विसर्जित कर दिया जाता है और अगले दिन जो अनाज भिगोकर रखा गया था (बिरुण) उसे प्रसाद के रुप में वितरीत किया जाता है।

बिणभार ने घर आकर पत्नी से कहा कि तू भी बहुओं से इस प्रथा को करने के लिए कह। सास ने बड़ी बहु से लेकर छट्ठी बहु तक सबसे ये करने को कहा लेकिन

किसी न किसी बहाने वह सब मुँह चढ़ाकर चली गयी, तब सास सबसे छोटी बहु के पास गयी और उससे बिरुण भिगोने को कहा। बहू जब अनाज इकट्ठा कर रही थी तब उसने एक चिमटा आग के बीच में रख लिया बिरुण मिलाते समय उसकी जीभ में अब भी चुलबुलाहट होती तो वह गरम चिमटा जीभ पर रख देती, सारी प्रक्रिया उसने नियमानुसार पूरी कर ली।

गौरा महेश्वर की कृपा से उसे पुत्र प्राप्त होता है। एक दिन बिणभार एक ब्राह्मण के घर बच्चे के भविष्य के बारे में पूछने जाता है तो ब्राह्मण उसे बताता है कि बच्चा मूल नक्षत्र में पैदा हुआ है अतः वह किसी के लिए शुभ नहीं है। अगर वह जीवित रहा तो तुम सब का अशुभ निश्चित है। बिणभार चिन्तित हो कर घर लौट आया।

घर जाकर उसने सारी बात अपनी पत्नी को बताई। उसकी पत्नी ने बच्चे को ठिकाने लगाने की सारी योजना बना डाली। एक दिन जब बहु बाहर गयी थी और जैसे ही वह घर पर आई तो सास ने उसे सूचना दी कि उसके पिता मरणासन्न स्थिति में हैं इसलिए वह जल्दी अपने मायके जाए। जब बहू जाते समय अपने बच्चे को साथ ले जाने लगी तो सास ने कहा इसे यहीं छोड़ जा हम लोग इसकी देखभाल कर लेंगे वैसे भी एक दो दिन में तू आ ही जाएगी इसलिए बच्चे को इतनी यात्रा करना ठीक नही है। बहू सासू की बातों में आ गयी। लेकिन जब बहु घर पहुँची तो देखा कि माँ और पिताजी दोनो स्वस्थ है व अपने कार्य में लगे हुए है। उसने तुरन्त माँ को सारी बात बताई।

माँ को यह सुनकर आश्चर्य हुआ तथा शक पैदा हुआ कि झूठी कहानी बनाकर बिना बच्चे के उसे यहाँ क्यों भेजा गया। उसने कहा बेटी मुझे तेरे बच्चे के प्रति तेरे ससुराल वालों पर कुछ शक हो रहा है। यदि तू सब कुछ ठीक – ठाक देखना चाहती

है तो उल्टे पैर लौट जा। जाते समय माँ ने सरसों के कुछ दाने उसकी मुट्ठी में दिये और कहा इन्हें रास्ते में डालते जाना। यदि ये तुरन्त अंकुरीत हुए तो समझना तेरा बच्चा कुशल से है वह सरसों विखेरती हुई जाती रही तो देखा सभी सरसों अंकुरीत हो रहे हैं। जब वह गाँव के बाहर प्यास बुझाने के लिए एक जलाशय में झुकती है तो उसके गले में पड़ा दुपट्टा पानी में लगता है और वहाँ फैंका गया वह बच्चा कसकर उसे पकड़ लेता है, वह बच्चे को बाहर निकालकर उसे छाती से लगा लेती है। गौरा महेश्वर की कृपा से बच्चे को कुछ नहीं होता।

जब वह घर पहुँचती है सभी शयम्मित हो जाते है। बच्चा घर में पलने लगा लेकिन वैसा कुछ भी नहीं हुआ जिस अशुभ के बारे में ब्राह्मण ने बताता था। अतएव सभी बातें असत्य सिद्ध हो गई और परिवार के सभी सदस्य बच्चे से काफी स्नेह करने लगे और बिणभार के वंश को पुत्र देने के कारण सभी की तिरस्कृत वह बहु भी सम्मान की पात्र बन गई। यह सब गौरा – महेश्वर की कृपा से सम्भव हुआ।

सार :

एक विणभाट था। जिसके सात बेटे थे। उनके बेटों की संतान नहीं थी। फिर बिणभाट अपनी पत्नी से कहता है कि गोपियों ने कहा है आज (पंचमी) के दिन बिरूड़ भिगोने से सन्तान प्रप्ति होती है। तू बहुओं को कहना सभी बहुएँ बिरूड़ भिगोती हैं। मगर एक – एक दाना खा लेती है पर सबसे छोटी बहू नहीं खाती। तब उसको पुत्र प्राप्ति होती है। ईर्ष्यावश सभी छः बहुएँ छोटी बहु को मायके बहाने से भेज देती है। जब वह मायके पहुँचती है तो वह देखती है सब ठीक है। चिंतावश वह वापस आती है तब उसकी माँ सरसों के दाने देकर कहती है तुम यह रास्ते में डालते जाना। दाने अंकुरित होते जायेंगे तो समझना तेरा बच्चा ठीक है। वह ऐसा ही करती है। दाने

अंकुरित होते रहते हैं तो वह समझती है मेरा बच्चा ठीक है। उसे चलते – चलते प्यास लगती है तो वह जलाशय में झुकती है। तब उसका बच्चा उसकी साड़ी का आँचल पकड़ लेता है। वह अपने बच्चे को गले लगा लेती है और वापस अपने घर आ जाती है। तो गाँव के ब्राह्मण ने वर्षा न होने की भविष्यवाणी की थी, वह झूठी पड़ जाती है। और तब से आठूँ के दिन महेश्वर की स्थापना के पश्चात् एक लोटे में पानी भरकर सभी स्त्रियाँ उसमें बिरूड़ का एक – एक दाना डालती है और ''हों भलौ हों भलौं'' कहती है। तथा बिणभाट की कथा सुनाते हैं।

इस प्रकार से यह एक सामाजिक, धार्मिक कथा है।

पशु – पक्षिनै्कि बोलि

एक गाँव में एक बूढ़ा व उसका बेटा रहता था। बूढ़े ने पास के ही एक गाँव से अपनी बहू पसन्द की तथा बेटे का विवाह कर दिया। उसकी बहू में एक विलक्षण प्रतिभा थी वह सभी जानवरों की बोली सहजता से समझ जाती थी।

एक दिन रात में सियारों के बोलने की आवाज उसे सुनाई दी। सियार आपस में बात कर रहे थे कि यहाँ जो लाश पडी है उसकी जाँघ में सोने की गिन्नीयाँ पड़ी हैं यदि कोई इन्हें ले जाए तो हम लाश को खा लेंगे, बूढ़े की बहू उसकी बोली समझ गई लेकिन रात ज्यादा थी और वह बाहर जाने में डर रही थी। उसका पति आराम की नींद सो रहा था इसलिए वह उसे जगाना भी नहीं चाहती थी। अन्ततः उसंने निश्चय किया कि वह जाएगी और लाश में से सोने की गिन्नीयाँ निकालकर अपने घर के वैभव को बढ़ाएगी।

जब वह गिन्नीयाँ निकालकर वापस आ रही थी तो उसके पति की आँख खुल गई। उसने इधर – उधर देखा तो वह वहाँ नहीं थी। थोड़ी देर बाद जब वह घर पहुँची तो उसका पति बोला इतनी रात गये तुम कहाँ गयी थी।

उसने सारी बात अपने पति को बता दी परन्तु पति को उस पर शंका हो गई। उसको लगा कि इस औरत को रात में लाश खाने का शौक है। वह गुस्से से लाल पीला हो रहा था व उसने उसको छोड़ने का मन बना लिया। सुबह उठकर उसने अपने पिता से कहा कि लाश खाने वाली स्त्री के साथ मेरी शादी हुई है। अतः अब एक दिन भी मैं इसके साथ नहीं रहना चाहता। पिता, बहू से पहले ही सारी बात जान चुका था। उसने उसे बहुत समझाने की कोशिश की, लेकिन वह नहीं माना तो पिता को उसकी बात माननी पड़ी।

पिता बहू को लेकर उसके गाँव की ओर चल दिया। चलते चलते रास्ते में जब दोनों थक गये तो उन्होंने आराम करने का मन बनाया। पास ही दो झरने बह रहे थे। समीप में एक पेड़ की छाँव देखकर उन्होंने झरने का पानी पिया और वृक्ष के नीचे आराम के लिए लेट गये। लेटते ही बूढ़े को नींद आ गई, लेकिन उसकी बहू आराम करने लगी तभी पेड़ पर बैठा एक कौआ बोला इस दो जलधाराओं के बीच में अशर्फियों से भरे दो कलश रखे हैं व उन में एक साँप लिपटा हुआ है यदि तुम उन दोनों साँपो को अलग कर दो तो साँप मेरे खाने के काम आऐंगे। और अशर्फियाँ तुम ले लेना बहू बोली नहीं मुझे ये अशर्फियाँ नहीं चाहिए, बहू कौए से बात कर ही रही थी कि बूढे की नींद खुल गई। उसने बहु से कहा कि तू किससे बात कर रही थी। बहू ने सारी बात बता दी।

बूढा बोला यदि ऐसा है तो तू जाकर उन्हें ले आ तो हम तेरे मायके न जाकर सीधे अपने घर चलेंगे। बहू ने कहा कि सोने की गिन्नीयाँ लाने पर मुझे घर छोड़कर जाना पड़ रहा है यदि अशर्फियाँ ले आऊँगी तो पता नहीं क्या होगा। बूढ़े ने बहू को ढाँढस दिलाया कि ऐसा कुछ भी नहीं होगा उल्टा सब ठीक हो जाएगा। बहु ने जाकर दोनों साँपो को अलग किया और कलश लेकर श्वसुर के पास आ गई।

बूढा और बहू दोनों कलश हाथ में उठाए घर की तरफ चलने लगे चलते – चलते जब बूढा थक गया तो बूढा बोला बहू मैं थोड़ी देर आराम करता हूँ घर पास में ही है अतः तू चल में थोड़ी देर में पहुँचता हूँ। जब बहु घर अकेली पहुँची तो उसका पति उसे देखकर आग – बबुला हो गया। उसने सोचा कि यह लाश खाने वाली लगता है मेरे पिता को भी खा गई है। वह दौड़कर अन्दर गया व छुरी लाकर उसने अपनी पत्नी की गर्दन काट डाली।

थोड़ी देर बाद पिता भी वहाँ पहुँच गया। जब उसने यह सब दृश्य देखा तो उसे गहरा सदमा लगा। उसने कहा तूने इतनी विलक्षण प्रतिभावाली इस बहू को मारकर अपने हाथों से ही अपना घर उजाड़ लिया है और यह कर कर बूढे ने भी प्राण त्याग दिये।

सार :

इसमें बताया गया है कि यदि स्त्री घर से बाहर चली जाती है तो आदमी उस पर कैसे इल्जाम लगाता है, उसकी बात पर भरोसा नहीं करता, जबकि पति – पत्नी का रिश्ता भरोसे से ही कायम रहता है। और यदि स्त्री होती है तो उसका पति कहीं भी रहे उससे सवाल पूछने का अधिकार उसका नहीं है।

वह सामाजिक परिवेश के बारे में बताते हैं कि हमारा रूढ़ीवादी समाज है जिसमें मर्दों का प्रभूत्व पहले से चला आ रहा है और आज नारी कितने भी विकास की ओर हो परन्तु उन्हीं रूढ़ीवादीयों तथा सामाजिक बंधन में बंधी है।

मन इच्छा मुनड़ि

एक सेठ के तीन पुत्र थे। सेठ अब कारोबार बेटों को सौंप देना चाहता था। उसने तीनों को बुलाकर सौ रु. प्रत्येक को दिया और कहा कि तीनों जाकर शाम तक इस सौ रु. में से कुछ धन कमाकर दिखाओ। तीनों सेठ की आज्ञा पाकर अलग – अलग दिशाओं में चल दिये। दो बड़ों ने कुछ सामान खरीदा व उसे बेचने चल दिये लेकिन सबसे छोटा जब सामान खरीदने जा रहा था तभी उसने देखा कि एक हलवाई एक बिल्ली को मार रहा था। उसके पूछने पर हलवाई ने बताया कि ये बिल्ली उसके सौ रु. का दूध खराब कर गई है। उसने कहा आप १०० रु. मुझसे ले लो और इसे मारो मत। वह बिल्ली लेकर घर आ गया। शाम को जब तीनों घर पर आये तो दोनों ने अपने पिता को कमाया हुआ धन दिया। लेकिन छोटेवाले ने सारी बात बता दी पिता को गुस्सा तो आया लेकिन उस दिन उन्होंने कुछ नहीं कहा।

दूसरे दिन पिता ने फिर सबको १०० रु. दिया और आज भी ऐसा ही करने को कहा दोनों बडे सामान खरीदकर उसे बेचने चल दिये लेकिन जब यह रास्ते से जा रहा था तो एक स्थान पर विवाह हो रहा था तो वहाँ पर कुछ लोग एक कुत्ते को घेर कर मार रहे थे। इसके पूछने पर लोगों ने बताया कि यह कुत्ता बारातियों के लिए लाए गये चावल में मुँह मार गया है जिससे उन्हें फिर चावल खरीदने पड़ेंगे। उसने इस बार भी कुत्ते को मारने से मना कर दिया और उन्हें १०० रु. देकर कुत्ता लेकर घर वापस आ गया। पिता को जब हिसाब दिया जा रहा था तो इसने सब बात बता दी। तीसरे

दिन पिता ने तीनों को फिर सौ रुपये दिये और इससे कहा कि यदि तूने फिर ऐसा किया तो तू घर मत आना।

तीसरे दिन दोनों ने सामान खरीदा और बेचने चल दिये लेकिन यह सामान खरीदने जा रहा था को इसने देखा कि एक कपड़े का व्यापारी चूहे दानी में एक चूहा रखकर उसे मारने जा रहा था उसने पूछा भाई तुम इसे क्यों मारना चाहते हो? व्यापारी बोला इसने मेरे सारे कपडे कुतर डाले है जिससे व्यापार में मुझे काफी नुकसान उठाना पड रहा है। उसने इसे भी १०० रुपये देकर चूहा लेकर डरते – डरते घर की ओर चल दिया।

जब पिता को यह पता चला तो उसने उसकी माँ को बुलाकर कहा आज ही इसे घर से निकाल दो और खाने को भी कुछ मत देना पिता का गुस्सा देख, वह स्वयं और साथ में उसकी बिल्ली, कुत्ता और चूहा भी घर के पिछवाडे में छुप गए।

रात में खाने के बाद माँ का मन नहीं माना उसने एक पोटली घर के पिछवाडे फेंक दी बेटे ने वह पोटली उठा ली तथा वह उसके तीनों साथी जंगल की तरफ चल दिये। सुबह होने पर वे काफी दूर निकल चुके थे। थकान के कारण वे एक गुफा के उपर बैठे और लड़के ने पोटली खोली और रोटियाँ निकाल कर वह बोला अरे यहाँ तो तीन है चार होती तो सब एक एक खा लेते। गुफा के अन्दर परियाँ रहती थीं। उन्होंने सोचा ये लोग हमें खाने की बात कर रहे है।

वे बाहर आयी और उनसे बोली तुम लोग हमें खाओ मत इसके बदले हम तुम्हें एक जादुई अंगुठी देंगे उससे तुम जो भी माँगोगे तुम्हें मिल जाएगा और उन्होंने वो अंगूठी उसको दे दी।

चलते समय कुत्ते ने अंगुठी से कहा कि हमारे राजा के लिए एक महल बन जाए और रानी सहित महल की सारी सुख सुविधाएँ उसमें हो और ऐसा ही हुआ, कुत्ते, बिल्ली और चूहे का मालिक यहाँ का राजा बन गया वे सब आराम से रहने लगे।

जंगल से कुछ दूर एक तांत्रिक ब्राह्मण रहता था। उसे अपनी तंत्र विद्या द्वारा पता लगा लिया कि यह सब जादूई अंगूठी के कारण इस जंगल में हुआ है और अंगूठी महल की रसोई में छुपा कर रखी हुई है। उसने अपनी पत्नी से कहा कि तू कामवाली बनकर राजा के घर में काम माँगने जा और वह अंगूठी चुरा कर ले आ।

ब्राह्मणी रानी के पास गई और बोली रानी आप काम करते थक जाती होंगी इसलिए मैं आपके बर्तन साफ कर दिया करुँगी पर पर रानी ने कहा नहीं वह मुझे कुछ ज्यादा नहीं लगता मैं कर लिया करुँगी तो वह बोली चलो मैं चुल्हा ही लीप – पोत देती हूँ ऐसा कहकर वह चूल्हा लीपने के बहाने गई और अंगुठी चुरा कर महल के बाहर आ गई। महल के बाहर आते ही वह महल तथा सब कुछ गायब हो गया जैसे ही राजा और उसके तीनों साथी वहाँ पहुँचे तो वहा सब कुछ गायब था। वे यह सब समझ गए कि कोई अंगूठी चुरा कर ले गया है।

अंगूठी चुराकर ब्राह्मणी ने ब्राह्मण को दे दी, कोई और उसे चुरा न ले यह सोचकर ब्राह्मण ने वह अंगूठी अपने मुँह में छिपा कर रखी थी। उधर चारों विचार कर रहे थे तो सबने कहा कि कुत्ते की सूँघने की शक्ति बहुत तेज है अतः यह पता लगाएगा कि अंगूठी कहाँ पर है फिर हम तीनों योजना बनाकर उस अंगूठी को प्राप्त कर लेंगे कुत्ता सुंघते – सुंघते ब्राह्मण के घर तक पहुँचा, उस समय ब्राह्मण मुँह में अंगूठी डालकर सो रहा था। कुत्ते ने बताया कि अंगूठी इसी घर के अन्दर है इस पर उसका मालिक बोला पर अंदर से अंगूठी ढूँढकर लाएगा कौन? कुत्ता बोला मालिक

आप बाहर ही रहिये मैं देहरी में खडा रहूँगा बिल्ली धुँआ निकलने की जगह से देखती रहेगी और चूहा बिल बनाकर अंदर जाएगा और अंगूठी ढूँढ कर ले आएगा, चारों ने ऐसा ही किया।

चूहे ने सारा घर छान मारा लेकिन उसे अंगूठी नहीं मिली तो उसे सोते हुए ब्राह्मण के मुँह में अंगूठी होने का एहसास हुआ वह फूर्ती से ब्राह्मण के पास गया और अपनी पूँछ ब्राह्मण की नाक में डाल दी। इससे ब्राह्मण को जोर की छींक आई और अंगूठी उछलकर बाहर आ गई तब चूहा उसे उठाकर बाहर आ गया। अंगूठी कुत्ते ने मुँह में दबा ली और चारों वहाँ से चल पड़े।

चलते – चलते तालाब के किनारे पेड़ पर एक कौआ बैठा था कौए को देखकर कुत्ते ने भौंकना शुरु कर दिया। जिससे अंगूठी गिर गई और कौआ झट से उसे चोंच में दबा कर उड़ चला। चारों अब बड़े परेशान हो गए यदि अंगूठी नहीं मिली तो चारों भूखे ही मर जाऐंगे। तब बिल्ली ने एक युक्ति सुझाई। उसने चूहे से कहा कि तु मरने का नाटक कर, तुझे मरा समझकर कौआ तुम्हें खाने आएगा और हम उससे अंगूठी ले लेंगे। चूहे ने ऐसा ही किया थोड़ी देर में चूहे को मरा समझ कौआ अन्य कौओं को बुलाने के लिए कांव कांव करने लगा और अंगूठी नीचे गिर गई। वे चारों अंगूठी लेकर वापस आये और सब कुछ पहले की तरह सामान्य हो गया।

एक दिन राजा का मन माँ से मिलने के लिए व्याकुल हो गया। माँ की याद में वह उदास हो गया तो रानी ने उससे उदासी का कारण पूछा। उसने सब बात बता दी। रानी बोली तुम जाकर माँ से मिल आओ। वह तीनों को रानी की देखरेख के लिए वहीं छोड़कर गाँव की तरफ चल दिया। उसकी माँ जंगल में से कई स्त्रियों के साथ लकड़ी काटकर वापस आ रही थी। जब उसने राजकुमार के वेश में घोड़े पर बैठे उसे

देखा तो वह तुरंत पहचान गई और बोली यह तो मेरा बेटा है। औरतों ने कहा यह तेरा बेटा हो ही नहीं सकता। तब राजा बोला हाँ माँ मैं तेरा ही बेटा हूँ और तुझे अपने साथ ले जाने आया हूँ। भीड़ देखकर पिता भी वहाँ आ गया। उसने पिता को प्रणाम किया और कहा मेरे कारण आपने माँ को काफी कष्ट दिये है अब मैं माँ को लेने आया हूँ। पिता को उसका राजसी रुप देखकर आश्चर्य हुआ और उन्होंने उसे घर चलने को कहा लेकिन वह माँ को साथे ले जाने व घर पर न जाने के लिए अड़ गया। माँ ने समझाया कि बेटा तेरे पिता को छोडकर मैं तेरे साथ नहीं आ सकती। तू पहले घर चल माँ के कहने पर वह घर आ गया व सबको अपने परिवार के बारे में व राजसी वैभव के बारे में बताया, बहू लाया लेकिन तूने पूजा – पाठ भी कराया की नहीं? उसके मना करने पर माँ ने कहा कि ठीक है तू तेरे घर में पूजा – पाठ करवा फिर हम सब वहाँ आएँगे व बहू को आशीर्वाद देंगे। अगले दिन यज्ञ कराने का वादा करके माता – पिता तथा भाइयों को लेकर अपने महल में आया। उसका राजसी ठाठ देखकर सब बहुत खुश हुए। सब के पूछने पर कि यह सब कैसे हुआ उसने कहा कि यह ईश्वरीय कृपा है और अंगूठी के बारे में उसने किसी को कुछ नहीं बताया। कुछ दिन बेटे – बहू के साथ रहकर यज्ञ होने पर माता – पिता तथा भाई उन दोनों आशीर्वादित कर अपने घर लौट आए। अब वह रानी तथा कुत्ते, बिल्ली और चूहे के साथ आनन्द से रहने लगा।

सार :

इस कथा के माध्यम से पशुओं, परियों के चमत्कार के विषय में बताया गया है कि किस प्रकार पहले के जमाने में परियाँ होती थी, तथा वह अपनी जादुई छड़ी से कुछ भी कर देती थी।

यह लोगों को भगवान के प्रति श्रद्धा बताई गई है कि किस प्रकार से अपनी अच्छाई, कर्म का योगदान भगवान को धन्यवाद करके देते थे।

कुमाऊँ में ही नहीं हमारे देश की प्रत्येक कथाओं में परियों की कथाएँ सुनाई जाती हैं क्योंकि परियों की कथाओं में बच्चों को आनंद मिलता है तथा हम अपने मनोरंजन के लिए भी यह कथाएँ सुनते – सुनाते हैं।

बुलांणी चड़िक पिंज्यौर

एक महल में एक राजा और उसके छः नौकर रहते थे। सातों में बड़ा घनिष्ट प्रेम था। एक दिन राजा बोला हम सबको विवाह कर लेना चाहिए। लेकिन हम विवाह उसी से करेगें जो सात बहिनें हों। उसने नौकरों को आदेश दिया कि सात बहिनों वाले परिवार को ढूँढ़ा जाय। ढूँढते – ढूँढते नौकरों को ऐसा परिवार मिल गया। जिसमें सात बहिनें थी।

राजा ने उसके पिता को बुलाया और सारी बात बताई। क्योंकि उन सातों में सबसे छोटी रुप और गुणों में सबसे धनवान थी। इसलिए उसका विवाह राजा के साथ व अन्य छः का राजा के नौकरों के साथ होना तय हुआ। विवाह के पश्चात् एक अजीब सा क्रम घर में घटने लगा। सबसे छोटी रानी होने के कारण सारी बड़ी बहिनों को सुबह उठकर उसके पैर छुने पड़ते थे। जिससे उनके मन ग्लानि से भर गये थे। अतः सबने मिलकर उसे सबक सिखाने की सोची। रानी गर्भवती हो गयी और प्रसव का दिन भी आ गया। प्रसव के समय छहों बहिनें रानी के साथ रही व राजा को यह कहकर बाहर भेज दिया गया कि सन्तान होने की सूचना सबसे पहले उसे ही दी जाएगी। रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया तभी छहों बहिनों ने मिलकर एक पिंजरा मँगवाया तथा उस नवजात को उसमें बन्द कर नदी में बहा दिया तथा उसके स्थान

पर एक कुत्ते का पिल्ला रख दिया तथा राजा को सूचना दी गई कि रानी ने कुत्ते को जन्म दिया है। राजा को अफसोस तो हुआ लेकिन उसने सब ईश्वर की ईच्छा समझकर स्वीकार कर लिया।

कुछ समय बाद रानी फिर से गर्भवती हुई। इस बार प्रसव के दिन भी वही किया गया। इस बार भी रानी को पुत्र प्राप्त हुआ। लेकिन उसे भी पिंजरे में रखकर बहा दिया गया। उसके सामने एक सिलबट्टा (मसाले पीसने की पत्थर की बड़ी सी आकृति) रख दिया। रानी को यह सब पता नहीं चल पाता था, क्योंकि प्रसव के समय उसकी आँखो में काली पट्टी बाँध दी जाती थी। राजा को भी इस बार भी यह सूचना दी गई कि रानी ने सिलबट्टे को जन्म दिया है। अब राजा ने ठान लिया कि यदि इस बार उसने मनुष्य का बच्चा नहीं जन्मा तो वह उसे महल से निकाल देगा।

तीसरी बार रानी गर्भवती हुई और फिर प्रसव के समय उसकी आँखो में काली पट्टी बाँध दी गई और इस बार रानी ने एक कन्या को जन्म दिया। उन छहों ने इस कन्या को भी पिंजरे में रखकर नदी में विसर्जित कर दिया तथा उसके बदले में एक बिल्ली का बच्चा रख दिया। राजा को जब यह सूचना मिली कि रानी ने बिल्ली के बच्चे को जन्म दिया है। तब वह आग बबूला हो गया। उसने नौकरों को आदेश दिया कि रानी को जंगल में मारकर फेंक दिया जाय तथा प्रमाण के तौर पर उसकी आँखें निकाल कर मुझे दिखाई जाए।

नौकर रानी को लेकर जंगल में गए तथा उन्होंने रानी से कहा कि ''रानी जी राजा के आदेश के कारण हमको यह करना पड़ रहा है। हम आपके साथ इतना अन्याय नहीं कर सकते कि आप को मार दे। इसलिए आप ऐसी जगह चली जाना जहाँ राजा की नजर आप पर न पड़े। वे चारों वापस आ रहे थे तो उन्होंने एक हिरन

के बच्चे की आँख निकालकर रख ली और महल में ले जाकर राजा के सामने रख दी।

कई दिन जंगल में रहने के बाद अचानक रानी की नजर एक लकड़हारे पर पड़ी। जो लकड़ियों का गट्ठर बना रहा था। रानी भी लकड़ियाँ बीनने लगी। जब लकडहारा लकडियाँ लेकर जाने लगा तो रानी भी उसके पीछे चल दी। लकड़हारे ने दो तीन बार पीछे मुड़कर देखा तो उसे कुछ शक हुआ और उसने उससे पूछा कि तुम्हें कहाँ जाना है तथा तुम मेरे पीछे क्यों आ रही हो? रानी ने कहा कि मुझे जंगल में रहते कई दिन हो गए हैं और मुझे किसी आदमियों की बस्ती में जाना है। इसलिए मैं तुम्हारे पीछे आ रही थी।

उस दिन लकडियाँ बेचने पर लकड़हारे को दुगने दाम मिले। वह रानी को लेकर घर आ गया। घर पर जब उसने पत्नी से कहा कि इसकी लाई लकड़ियों को और मेरी लकड़ियों को आज दुगने दाम मिले हैं। इसके आने से मुझे लगता है घर में लक्ष्मी का आशीर्वाद आ गया है। अतः हम इसे घर में रख लेते है। इस प्रकार वह लकड़हारे के घर में रहने लगी। तथा घर के सारे काम उसने अपने हाथ में ले लिये। घर को जितने खर्च में लकड़हारे की पत्नी चलाती वह उससे आधे खर्च में ही घर में सारी व्यवस्था कर लेती और उधर लकड़हारे की आमदनी भी बढ़ने लगी। इस प्रकार लकड़हारे के पास अच्छा धन संचय होने लगा। अब उसने एक खच्चर भी खरीद लिया जिससे वह चार गुना और लकड़ियाँ जंगल से ला पाता। उधर दूसरे गाँव में एक मछुआरा रोज़ मछलियाँ पकड़ने नदी पार जाता था तथा महल से निकालकर नदी में बहाये गये तीनों बच्चे उसके हाथ लग गये थे और वह उन्हें अपना समझकर उनका लालन पालन कर रहा था।

एक दिन एक ब्राह्मण राजा के घर आया और बोला राजा मुझे इस घर में कुछ अपशुकन लग रहा है। राजा ने कहा कि मेरी कुन्डली में क्या रखा है? लेकिन फिर भी उसने कुण्डली ब्राह्मण के सामने रख दी। ब्राह्मण ने कुण्डली देखकर कहा कि आपके योग में तीन सन्तानें हैं लेकिन यहाँ न तो आपकी रानी दिखाई दे रही है और न बच्चे, यह सुनकर राजा ने सारी बात ब्राह्मण को बताई। ब्राह्मण ने अपनी विद्या के द्वारा पता लगाया तथा राजा से कहा कि आपकी रानी अभी भी जीवित है तथा वह जिस घर में है उस घर की स्थिति उसके जाने से और भी अच्छी हो गई है। राजा को ब्राह्मण की बातों पर विश्वास न हुआ तो उसने नौकरों को बुलाकर रानी के बारे में पूछा। डर के कारण नौकरों ने सच बात राजा को बता दी। राजा ने नौकरों को आदेश दिया कि किसी भी तरह रानी का पता लगाया जाय। कई दिन ढूँढने के बाद नौकरों ने रानी का पता पा लिया और राजा को इसकी सूचना दी। सूचना पाते ही राजा ने नौकरों को बुलाया और कहा कि रानी को सम्मान सहित महल में ले आओ। नौकर रानी के पास गए और उनसे वापस चलने का आग्रह किया किन्तु रानी महल में वापस जाने को तैयार न हुई।

राजा ने फिर ब्राह्मण को बुलाकर कहा पंडितजी कोई ऐसा उपाय बताईये जिससे रानी वापस आ जाय ब्राह्मण ने कहा राजा अब तो समय ही ऐसा कर सकता है इसके लिए मेरे पास कोई उपाय नहीं है। लेकिन इससे कड़वा और वास्तविक सच मैं तुम्हें बताता हूँ कि आपकी रानी ने दो पुत्र तथा एक पुत्री को जन्म दिया था तथा वे अभी जीवित है। तुम्हारी नौकरानीयों ने रानी से ईर्ष्या वश उन्हें पैदा होते ही नदी में बहा दिया था तथा वे एक मछुआरे को मिल गये व अब वह उन तीनों को पाल रहा है। यह सुनकर राजा काफी उदास हो गया तथा उस दिन से वह रोज शिकार करने के बहाने जंगल जाता तथा वहाँ सारे दिन उदास बैठा रहता।

उधर मछुआरा काफी वृध्ध हो गया था और उसके तीनों बच्चे बड़े हो गये थे। एक दिन वे जंगल में शिकार करने गये थे तो उनकी मुलाकात राजा से हुई राजा ने उनसे उनके बारे में पूछा उन्होंने बताया कि उनके पिता मछली मारकर परिवार का पेट पालते है। काफी देर तक राजा के पास बैठने के बाद राजा ने उन्हें अपने बारे में बताया कि मैं इस जगह का राजा हूँ। उन दोनों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि राजा होने के बाद भी यह इतना उदास है। कुछ देर बातें होने पर वे दोनों घर वापस आ गए।

मछुआरे ने एक नया मकान बनाया था। जिसका कुछ दिन बाद गृहप्रवेश होना था तो उन दोनों ने सोचा क्यों न उस राजा को भी इस खुशी में शामिल किया जाय। वे शिकार का बहाना करके जंगल को चल दिये। इधर मछुआरा दूसरे जानने वालों को निमंत्रित करने के लिए चल दिया। घर में अकेली उन दोनों की बहन थी। दिन के समय एक बुढिया वहाँ आयी और उनकी बहन से बोली कि घर तो बहुत अच्छा बनाया पर इसमें एक बोलती चिड़िया का पिंजरा होता तो तुम और ज्यादा खुशी महसूस करती। उधर दोनों भाई राजा को निमंत्रण दे कर वापस घर आ गए। शाम को बहन को उदास देखकर उन्होंने उदासी का कारण पूछा तो बहन ने कहा कि उसे बोलती चिड़िया का पिंजरा चाहिए। गृहप्रवेश का कार्य भी सम्पन्न हो गया। राजा भी मेहमान के रुप में वहाँ आया था। गृहप्रवेश के बाद बहन फिर अपनी माँग रखने लगी, भाईयों को लगा कि वहन की उदासी दूर करने के लिए उन्हें यह कार्य करना होगा।

बड़ा भाई अगले ही दिन पिंजरा लाने के लिए चल दिया। पिंजरा सात समन्दर पार था तथा वहाँ का रास्ता बड़ा दुर्गम था। तीन समन्दर पार करके भाई को एक जोगी मिला। जोगी ने उसे बहुत समझाया कि वहाँ तक जाना बहुत कठिन है। आज तक हजारों लोग वहाँ गये हैं लेकिन वापस कोई नहीं आया। लेकिन वह अपनी बहन की माँग पूरी करने के लिए कुछ भी करने को तैयार था, जाते समय जोगी ने उससे

कहा कि मैं इस थाल में पानी रख रहा हूँ यदि तू जिन्दा रहा तो यह पानी नहीं सुखेगा यदि तू मर गया तो यह पानी सूख जाएगा। इस प्रकार अचानक एक दिन पानी सूख गया। कई दिन बाद भी जब वह घर नहीं आया तो छोटा भाई उसे खोजने निकला और उसी साधू की कुटीया में आकर रुका। साधु ने उसे सारी कहानी बताई। लेकिन वह भी जाने की जिद करने लगा। तब साधुने कहा ठीक है यह फूल मैं तोड़कर रख रहा हूँ यदि यह सूख गया तो मैं समझ लूगा कि तू मर गया है और अचानक एक दिन वह फूल भी सूख गया।

दोनों भाईयों के वापस न आने पर बहन को उनकी चिन्ता होने लगी और वह उन्हें ढूँढने निकली। खोजते ड्ड खोजते वह भी उसी साधू की कुटिया के पास आकर रुकी तो साधू ने उसके आने का कारण पूछा तो उसने बताया कि उसके दो भाई उसके लिए बोलती चिड़िया के पिंजरे को पाने के लिए निकले थे। लेकिन अभी तक उनका कोई पता नहीं है। साधु ने उसे बताया कि तुम्हारे दोनों भाईयों को मैंने बहुत समझाया था लेकिन वे नहीं माने तुम उन्हें मरा समझो।

लड़की को बड़ा दुःख हुआ उसे अपने ऊपर बड़ा गुस्सा आया कि उसकी ज़िद् के कारण उसके भाई नहीं रहे। तभी लड़की ने निर्णय किया कि वह सच का पता लगाकर ही रहेगी और उसने वहाँ जाने के लिए जोगी के चरण छूकर आशीर्वाद लिया। जोगी ने मना करने पर भी जब वह नहीं मानी तो जोगी ने कहा ठीक है यदि तू नहीं मानती तो मैं बभूति का एक गोला लुड़काऊगाँ लुडकते हुए जहाँ जाकर यह टकराकर उछलेगा वहीं बोलती चिड़िया का पिंजरा होगा।

लड़की बभूति के गोले के पीछे चल दी। अचानक एक स्थान पर गोला टकराकर उछला तो लड़की ने देखा वहाँ बोलती चिड़िया का पिंजरा और एक अमृत

भरा पात्र रखा है। बाकी स्थानों पर कई सारी अस्थियाँ पडी थी। लड़की ने पिंजरा लिया और अमृत को उन अस्थियों पर छिड़का तो हजारों लोग जीवित हो उठे। जब वह लौट रही थी तो उसके पीछे हजारों पुनर्जीवित लोगों का एक समूह था। वे सब लौटकर जोगी के पास आये। लड़की ने जोगी से कहा महाराज अब मुझे मेरे भाईयों से मिलवाईये जोगी बोला ''रात में भजन – किर्तन के बाद मैं तुझे तेरे भाईयों से मिलवा दूँगा। रात में भजन कीर्तन के बाद सब लोग पंक्तिबद्ध होकर बैठ गये। तब जोगी ने उससे सबको खाना परोसने को कहा। खाना परोसते वह अपने भाईयों के पास पहुँची और उन्हें पहचान लिया। भाईयों के पूछने पर कि वे जीवित कैसे हुए उसने सारी कहानी उन्हें बता दी। काफी समय बीत गया था। इस बीच मछुआरे की भी मृत्यु हो चुकी थी।

घर पहुँचकर उन्होंने अपनी बहन से कहा कि तू भोजन की तैयारी कर हम अपने मित्रों को बुलाते हैं। आज सब साथ में भोजन करेंगे, ऐसा कहकर दोनों भाई चले गये। निमंत्रित लोगों में राजा भी था। जब सब लोग खाना खा रहे थे तो लड़की बाहर अपनी पोशाक बदल कर खाना परोस रही थी। तभी राजा ने उसके भाईयों से कहा कि दोस्तों क्या तुम्हारे घर में कई स्त्रियाँ भी है। भाईयों ने उत्तर दिया नहीं तो, हमारी तो एक ही बहन है तभी पिंजरे में से चिड़िया बोल पड़ी ''अबूझ की नगरी बेबस राजा'' राजा इधर उधर देखने लगा चिड़िया ने फिर वही वाक्य दोहराया, इस बार राजा ने चिड़िया से पूछ लिया कि वह बाहर मुझे ऐसा क्यों सुना रही है? चिड़िया ने कहा कि तू सबको बाहर भेज दे तब में तुझे एक हकीकत बताऊँगी। राजा ने ऐसा ही किया और पिंजरा उतारकर अपने सामने रख दिया।

चिड़िया बोली ''तू बुद्धिहीन राजा है। क्या कोई स्त्री कुत्ते, बिल्ली और सिलबट्टे को जन्म दे सकती है? तेरी सन्तान को जिन्होंने नदी में बहा दिया उन्हीं की बातों में

आकर तूने अपनी पत्नी को घर से निकाल दिया और उन्हें ही राजपाट सोंप दिया। राजा ने कहा तू सब सच कह रही है पर ये तो बता मेरे बच्चें कहाँ है? चिड़िया ने कहा जो लड़के तुझे यहाँ लाए हैं वे ही तेरे पुत्र हैं तथा लड़की उनकी बहन है। राजा वापस राजमहल आ गया और फिर उसने नौकरों से रानी को वापस लाने को कहा नौकरों ने कहा महाराज वे हमारे कहने से वापस नहीं आएँगी। आप स्वयं जाकर उनसे विनंती कीजिए।

राजा रानी के पास गया और बहुत मनाने पर वह राजा के साथ चलने को तैयार हुई। चलते समय राजा ने चिड़िया द्वारा कही गई पूरी कहानी रानी को सुना दी। राजा रानी को लेकर वापस बच्चों के पास आया और बोलती चिड़िया ने बच्चों से उनके वास्तविक माता – पिता से मिलवाया। वहाँ से राजा अकेले महल में आया और नौकरों से कहा कि छः चुल्हे जलाओ और उस पर छः तेल से भरी कढ़ाई रख दो तथा अपनी पत्नीयों को यहाँ भेजो और तुम जाकर अस्तबल में घोड़ों की मालिश करो। जब कढ़ाई में तेल खौलने लगा तो राजा ने छःहों से कहा कि कढ़ाई के पास खड़े होकर तेल में अपना मुँह देखो उन्होंने जैसे ही ऐसा किया राजा ने एक – एक कर तलवार से सबकी गरदन काट डाली और नौकरों से कहा कि इनके शरीर कुत्तों को खिला दो। इसके पश्चात् राजा अपनी पत्नी व बच्चों को राजमहल में ले आया व छः नौकरों व अपने परिवार के साथ आनन्द पूर्वक रहने लगा।

सार :

यह एक राजा कि कथा है कि वह किस प्रकार से अपने सेवकों का ध्यान रखते हुए ऐसे घर में शादी करता है जिसमें सात बहने हों। परन्तु वही छः बहने

ईर्ष्यावश अपनी रानी बहन के बच्चों को बहुत दूर भेज देती है तथा उसका घर बरबाद कर देती है।

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY 201 M. S. University of Baroda

इस कथा के माध्यम से यही बताने की कोशिश की गई है कि सब मिल – जुलकर परिवार में रहते थे परन्तु तब भी ईर्ष्या रहती थी और जो धीरे – धीरे अब परिवार टूटने या अलग होने का यही कारण है कि सब मिल जुलकर एक साथ नहीं रह सकते।

जस कैं तस

एक गाँव में एक बूढ़ा और उसके चार बेटे रहते थे। बच्चे जब जब छोटे ही थे तब उसकी पत्नी स्वर्गवासी हो गयी। बढ़े ने दिन रात एक करके किसी तरह उनका लालन पालन किया। समय बीतते उसने चारों का विवाह कर दिया। इधर बुढ़ा काफी कमजोर व अस्वस्थ रहने लगा। घर में चार बहुओं और उनके बच्चों के कारण किसी न किसी बात को लेकर अशांति बनी रहती थी। तंग आकर बूढ़े ने चारों को अलग करने का मन बना लिया।

बूढ़ा अब अकेले रहने लगा। चारों भाईओं के मतभेद के कारण बूढ़े को काफी परेशानियाँ उठानी पड़ रही थीं। अब वे बूढ़े की देखभाल तो क्या उसे ठीक से खाना तक नहीं खिला रहे थे। सब एक दूसरे से यही कहते थे कि पिता ने अकेले उसे ही थोड़ी पाला है। रोज की परेशानियों से तंग आकर तथा कई दिन भूखा रहने पर पिता का अपने पुत्रों पर से विश्वास उठ गया?

एक दिन उसने घर छोड़ने का निश्चय किया तथा सीधा अपने मित्र के घर पहुँच गया। मित्र ने उसका उचित सत्कार किया। रात को सब जब आराम करने के लिए गए तब उसने अपनी स्थिति के बारे में अपने मित्र को सब बता दिया। उसकी

आप बीती सुनकर उसके मित्र ने कहा इस घर को अपना समझो और अपना बचा हुआ समय यहाँ आनन्द से व्यतीत करो। बूढ़ा आनन्दपूर्वक अपने मित्र के वहाँ रहने लगा। काफी समय व्यतीत करने के बाद उसको अपने घर की याद सताने लगी। उसने मित्र से कहा मित्र तुमने मेरी काफी देख–भाल कर ली है। अब मेरा मन करता है कि मैं अपना अन्तिम समय अपने घर में ही बिताऊँ। बूढ़े की बात सुनकर मित्र को उसकी मनोदशा के बारे में सब पता चल गया और उसने उसका कोई विरोध नहीं किया। उसने कहा वे तुम्हारी सेवा, देख–रख ठीक से नहीं करेंगे। इसलिए मैं तुम्हें एक युक्ति बताता हूँ। जिससे तुम अपनी बाकी बची जिन्दगी ठीक से गुजार सको। चलते समय उसने बूढ़े को पत्थरों से भरा एक सन्दूक तथा पाँच सोने के सिक्के दिये और कहा जब भी तुम्हारे बेटे या बहुओं की नजर तुम पर पड़े तुम सन्दूक का ढक्कन खोलकर उसमें से ये सिक्के निकाल लेना और इन्हें गिनने लग जाना बाकी सन्दूक पर ताला लगा कर रखना। बूढ़ा वो सन्दूक लेकर गाँव वापस आ गया। बेटों के सामने पहुँचते ही उसने बेटों से सन्दूक उसके सिर से उतारने के लिए कहा। सन्दूक उतारते समय बेटों को उसमें काफी वजन लगा तथा कुछ सिक्कों के खड़कने की आवाज सुनाई दी। यहाँ से बेटों के मन में लालच आने लगा। उन्हें लगने लगा कि पिता के पास काफी धन है। धीरे – धीरे यह बात चारों के कान में पहुँच गयी। अब बेटे और बहुएँ बार – बार बूढ़े के चक्कर लगाने लगे। जब भी बेटे या बहुओं में से कोई दिखाई देता तो मित्र की बताई हुई युक्ति करने लगता अब तो बहुएँ बारी – बारी से उसके पास आतीं और उसकी देखरेख तथा खान – पान का उचित ख्याल रखतीं। सबको यही लगता कि वो जितना ज्यादा प्रभाव बूढ़े के मन में बना देंगी उतना धन उसको ज्यादा मिलेगा। एक दिन अचानक बूढ़े की मृत्यु हो गई। चारों ने राय मशवरा किया कि पिता के देह – संस्कार के बाद चारों भाईयों और पंच की उपस्थिति में ही इस

संन्दूक को खोला जाएगा। जल्दी में सबने बूढ़े का अंतिम संस्कार किया व धन के लालच में घर पहुँचे सभी पंचों और चारों भाईयों के सामने जब वह सन्दूक खोला गया तो उसमें सोने के सिक्कों के स्थान पर पत्थर देखकर सभी को सदमा लगा। चारों की हालत ऐसी थी कि काटो तो खून नहीं। तभी पंचों ने कहा कि पिता ने तुम्हारी परवरिश के लिए अपना सर्वस्व लुटा दिया। अपने सुख की चिन्ता छोड़ उन्होंने तुम्हारी माँ के अवसान के बाद भी तुम लोगों के खातिर दूसरी शादी नहीं की। लेकिन तुम लोगों के स्वार्थी व लालची स्वभाव के कारण तुम उन्हें बोझ समझते थे। यदि तुमने उन्हें बोझ न समझा होता और नि:श्वार्थ उनकी सेवा की होती तो तुम्हें इस तरह का दिखावा करने की जरूरत नहीं होती। पंचों की बात सुनकर उनको अपनी गलती का अहसास हुआ और सबके सिर शर्म से झुक गये।

सार :

इस कथा में चार बेटे होने पर भी उनके पिता का ध्यान रखना तथा खाना पीना को देना भी एक बहुत मुश्किल का काम हो जाता है।

जबकि पिता ने चारों बेटों को अकेले ही पाला होता है। उसी पिता का बुढ़ापे में कोई सहारा नहीं बनता। उसमें भी यदि कोई पिता से धन मिले तो उनकी देखभाल करे ऐसे स्वार्थी बेटों के बारे में बताया है।

हमारे समाज में यह परंपरा बहुत पुरानी है कि माँ – बाप की सेवा कोई नहीं करना चाहता। इसलिए मजबूरी में पिता को झूठी तरकीब का सहारा लेना पड़ता है। परन्तु आजकल ऐसे लोगों के लिए वृद्धाश्रम हैं जहाँ वह अपना अंतिम समय गुजारते हैं।

बहुत दुःख की बात है कि जिन बच्चों को वह इतने कष्ट से पाल – पोसकर बड़ा करते हैं वही बुढ़ापे में अपने स्वार्थ के लिए उनका तिरस्कार कर देते हैं।

द्वी भाई

एक बुढ़िया के दो बेटे थे। बड़ा बेटा तो ठीक था, किन्तु छोटा कम अक्ल था। बड़े बेटे का विवाह हो चुका था। उसकी पत्नी अपने मायके गई थी। बुढ़िया ने अपने छोटे बेटे से कहा – तू जाकर अपनी भाभी को मायके से बुला ला। यह कहकर उसने टोकरी भर पूड़ियाँ बनाकर अपने बेटे को दीं और कहा – ये अपनी भाभी के मायके में दे देना।

जब वह अपनी भाभी के मायके जा रहा था, रास्ते में अपनी परछाई को देख रहा था और मुड़कर उससे पूछने लगा – तू मेरे साथ क्यों आ रहा है? क्या तुझे भूख लगी है? सारे रास्ते उसे दूसरा आदमी समझकर उससे पूछता रहा और एक – एककर पूड़ी उसकी और फेंकता रहा। तुझे और चाहिए, ले खा ले, यह कहकर उसे पूड़ियाँ देता रहा। धीरे – धीरे उसकी टोकरी खाली हो गई। तब तक शाम हो गई और उसका साया भी ओझल हो गया। उसने फिर पीछे मुड़कर देखा, जब उसे कोई नहीं दिखा, तो वह बोला – अच्छा उसका पेट भर गया, इसीलिए वह चला गया।

हाथ में खाली टोकरी लेकर वह भाभी के मायके पहुँचा, किन्तु तब तक अँधेरा हो गया था। अतः वह भाभी के घर के बाहर के पतनाले के नीचे छिपकर खड़ा हो गया। जब उसकी भाभी ने वहाँ आकर हाथ धोए, तो पानी टप – टपकर नीचे उसके सिर पर टपकने लगा। वह बोला – मत टपक पतनाले मत टपक। मैं अपने बड़े भाई का भाई हूँ और भाभी का देवर। भाभी ने जब बोलने की आवाज सुनी, तो वह

उतरकर नीचे आई और उस पर दृष्टि पड़ते ही बोली – अरे ! यह तो मेरा देवर है। वह देवर का हाथ पकडकर घर के अन्दर ले गई।

देवर के हाथ में खाली टोकरी देखकर वह बोली – इसमें क्या लाए थे? देवर बोला – टोकरी में माँ ने पूड़ियाँ भेजी थीं। रास्ते में मेरे पीछे – पीछे एक भूखा आदमी आ रहा था, मैंने सब पूड़ियाँ उसे ही खिला दीं। कम अक्ल जानकर किसी ने उससे कुछ नहीं कहा।

अपनी भाभी को वह मायके से ले आया। उसकी माँ बीमार पड़ी थी। सुबह उसके बड़े भाई ने कहा – मैं और तेरी भाभी खेत में जा रहे हैं, तू माँ को खूब गरम पानी से नहला देना, उसकी पीठ में कुदाल से खोदने जैसा (बहुत मैला) मैल हो रहा है। अतः उसे भी निकला देना। यह कहकर दोनों खेत की ओर चल दिए। भैया – भाभी के जाने के बाद कम अक्ल लड़के ने पानी खूब गरम किया और अपनी माँ को उठाकर नहलाने के लिए ले गया। जब वह नहाने बैठी, तो लड़के ने गरम पानी अपनी माँ के सिर पर उड़ेल दिया। बुढ़िया दर्द से चिल्लाने लगी। तो वह बोला – तू चिल्ला मत चुपचाप बैठी रहा, यह कहकर वह कुदाल से अपनी माँ की पीठ को खोदने लगा। माँ बोली – तू ये क्या कर रहा है, मुझे मार डालेगा क्या? किन्तु उसने बुढ़िया को चुप कराते हुए कहा – बड़ा भाई मुझसे यही करने को कह गया है, यदि मैं नहीं करूँगा, तो वह नाराज हो जाएगा।

जब शाम को भैया – भाभी खेत से लौटकर आए, तो बड़े भाई ने उससे कहा – तूने माँ को नहलाया? उसने कहा – हाँ, माँ नहाधोकर आराम से सो रही है। जब बहुत देर तक माँ की नींद नहीं टूटी, तो बड़ा बेटा अपनी माँ को देखने गया। जब उसने माँ के मुँह पर से रजाई हटाई, तो देखा कि माँ मरी पड़ी है। उसने अपने छोटे

भाई से कहा – तूने तो माँ को मार डाला। छोटा बोला – मैंने मारा कहाँ? तूने ही तो कहा था कि माँ को गरम पानी से नहला देना। मैंने वैसा ही किया। खूब गरम पानी करके नहला दिया और कुदाल से मैला निकाल दिया। जब उसे नींद आ गई, तो उठाकर सुला दिया। बडे भाई को सारी बात समझ आ गई।

बड़ा बोला – अब माँ को श्मशान ले जाना है। छोटा बोला – न, पहले तू मुझे भट (सोयाबीन) भून कर दे। जब तक भट नहीं भूनेगा मैं नहीं जाऊँगा। बड़े भाई ने समझाते हुए कहा – आज माँ मरी है, इसलिए आज कुछ नहीं खाते। कम अक्ल बोला – न, पहले मुझे भट दे, तभी मैं जाऊँगा। जब वह किसी तरह भी न माना, तो बड़े भाई ने भट भूनकर उसे दे दिए। दोनों भाई माँ को लेकर चल दिए। कम अक्ल रास्ते में भट खाते हुए जा रहा था। खाते – खाते भट का एक दाना नीचे गिर पड़ा, तो उसने माँ को कन्धे से नीचे रख दिया और बोला – पहले मेरा भट का दाना ढूँढ़ तब जाएँगे। बड़े भाई ने बहुत ढूँढ़ा, किन्तु वह नहीं मिला, तो उसने समझाकर कहा – पहले माँ को ले जाते हैं, फिर तेरा दाना ढूंढ़ दूँगा। दोनों श्मशान चल दिए, वहाँ पहुँचकर बड़ा भाई बोला – तू माँ की पहरेदारी कर, मैं लकड़ियाँ ढूँढ़कर लाता हूँ। छोटा फिर भट का दाना ढूंढ़ने की जिद करने लगा। जैसे – तैसे उसे समझाकर माँ का दाह संस्कार किया और दोनों भाई घर लौट आए। कम अक्ल बोला – अब ढूँढ़ मेरा भट का दाना। भाई ने एक दूसरा भट का दाना उठाकर जब उसके हाथ में दिया, तब वह शान्त हुआ।

एक दिन वह अपने बड़े भाई से बोला – तूने अपना विवाह किया है, मेरा विवाह भी कर। भाई तुझसे विवाह करेगा कौन? तुझे तो बिलकुल भी अक्ल नहीं है। वह बोला – जहाँ से तूने अपना ब्याह किया है वहीं से मेरा भी कर। अन्ततः एक दिन बड़े भाई ने उसका विवाह कर ही दिया। विवाह के बाद वह कुछ ठीक होने लगा। घर

के कामों में अपने भैया – भाभी का हाथ बँटाने लगा। लेकिन एक दिन उसने अपने घर में आग लगा दी। गाँव के सभी लोग कहने लगे – आज इसने अपने घर में आग लगाई है, कल हमारे घरों में भी लगा सकता है। इसे गाँव से निकालो, इसे घर में क्यों रखा है? लोगों के ताने सुनकर बड़ा भाई बहुत दुःखी हो गया। वह अपने भाई को भला कैसे निकालता? अतः उसने उसे कमरे में बंद कर दिया।

उसकी (छोटे की) पत्नी बहुत समझदार थी, उसने धैर्यपूर्वक अपने पति को समझाया। अपने जेठ – जेठानी से कहा – आप खेतों का काम संभालिए, घर का काम और इन्हें मैं संभाल लूँगी। वह घर के कामों में अपने पति से मदद लेती और गलती करने पर प्यार से उसे समझाती थी। धीरे – धीरे वह लकड़ी काटना, पानी भरकर लाना, अनाज कूटना आदि सभी काम करने लगा। जब उसके भैया – भाभी ने उसे समझदारी से काम करते देखा, तो उन्हें बहुत अच्छा लगा और उन्होंने इसका सारा श्रेय भाई की पत्नी को दिया। सभी लोग बहुत प्रसन्न थे। इस तरह प्यार और समझदारी से एक अल्पबुद्धि भी बुद्धिमान व्यक्ति बन गया।

सार :

इसमें दो भाई की कथा है कि एक भाई का तो घर परिवार होता है परन्तु दूसरा मंदबुद्धि होता है तो उसकी पत्नी इतनी समझदार होती है कि उसको धीरे – धीरे अक्लवान बना देती है।

इस कथा के माध्यम से बताया है कि यदि घर की लक्ष्मी अच्छी हो तो पूरा घर सुखी हो जाता है परन्तु यदि अच्छी ना हो तो पूरा परिवार दुःख भोगता है।

स्त्रियों में इतनी क्षमता होती है कि वह राजा को रंक तथा रंग को राजा बना सकती है।

ग्वेल (गोलू देवता)

चम्पावत के राजा हलराय की सात रानियाँ थीं। छहों रानियों से राजा को सन्तान न होने पर सातवीं से विवाह किया। सातवीं रानी का नाम कलिका था। रानी के भाई का नाम सैम था। वह बहुत ज्ञानी व धार्मिक व्यक्ति था। उसे शिवजी का वरदान प्राप्त था। कुछ का तो यह भी मत है कि सैम स्वयं शिवजी के अवतार थे। सातवीं रानी के विवाह के पश्चात् कुछ ही दिनों में वह गर्भवती हो गयी। इसलिए राजा का झुकाव उसकी और ज्यादा रहने लगा। यह देखकर छहों रानियाँ उससे जलती थी। जब बच्चे के जन्म का समय आया तब छहों ने राजा को धैर्य बाँधते हुए कहा कि आप बाहर इन्तजार कीजिए। हम बच्चे की सूचना आपको दे देंगे। प्रसव के समय उन सब ने सातवीं रानी की आँखों में पट्टा बाँध दिया तथा जैसे ही उसने बच्चे को जन्म दिया सबने मिलकर बच्चे का मुँह तुरन्त बंध कर दिया। जिससे बच्चे के रोने की आवाज कोई सुन ना सके। फिर प्रसव स्थान पर एक सिलबट्टा (पत्थर की शिला जिस पर मसाले पीसे जाते थे) रख दिया तथा बच्चे को गौसाले में गायों के पैरों के नीचे चुपचाप रख दिया गया। बाद में राजा व सातवीं रानी को बताया गया कि उसने सिलबट्टे को जन्म दिया है। यह समाचार पूरे राज्य में फैल गया। राजा बड़े उदास व दुःखी थे। अब छहों रानियों ने सोचा कि बच्चा अब तक गायों के पैरों तले दबकर मर चुका होगा। इसलिए उसे कहीं ले जाकर दफना दिया जाय। जैसे ही वे गौसाला पहुँची तो देखा कि गायें उसे अपने शिशु की तरह थन से दूध पिला रही हैं। यह देखकर सबने निर्णय लिया कि बच्चे का गला दबाकर उसे रात में ही कहीं दूर फेंक दिया जाय। लेकिन अपने हाथों से शिशु की हत्या करने की हिम्मत किसी में नहीं हो रही थी। अन्त में सबने निर्णय लिया कि बच्चे को जंगल में झाडियों में फेंक दिया जाय। जिससे बच्चा पत्ते, ठंड और भूख से मर जायेगा। उसे कोई जंगली जानवर खा

जायेगा। सबने ऐसा ही किया। बच्चे के जन्म से ही बच्चे के मामा सैम की उस पर कृपा थी। वे ध्यान में रहकर यह सब देख रहे थे और उस पर अपनी कृपा बनाए हुए थे। इसलिए नवजात शिशु को कोई नुकसान नहीं हो रहा था। दूसरे दिन प्रातः रानियाँ सौच आदि का वहाना करके बच्चे को ठिकाने लगाने की नियत से गई तो देखा बच्चा आराम से खेल रहा है। इसके बाद रानियों ने बच्चे को मारने के कई उपाय किये कभी उसे अस्तबल में घोड़ों के पैरों के नीचे रख दिया, कभी उसे खूँखार साँपों के बीच में छोड़ दिया। लेकिन मामा सैम की कृपा से बच्चे का कुछ न हुआ। अन्त में रानियों ने बच्चे को एक बक्से में बंद कर बहा दिया। नदी में भाना नाम के एक मछुआरे ने जाल बिछा रखा था। जब उसने जाल खिंचा तो उसे बक्से में नवजात शिशु मिला। वहाँ पर उपस्थित उसके भाईयों ने उसे समझाया कि या तो ये किसी अविवाहिता की संतान होगा या तो अपने पालनकर्ता के लिए अनिष्टकारी होगा। अत: वह इसे वापस नदी में फेंक दे। लेकिन वह उसके लिए तैयार नहीं हुआ और बच्चे को घर ले आया। उसकी पत्नी भी बच्चे को देखकर काफी खुश थी। शाम को अचानक बच्चा जोर से रोने लगा। कई उपाय करने के बाद भी जब वह चुप नहीं हुआ तो भाना ने अपनी पत्नी से कहा कि बच्चे को अपनी छाती से लगा ले हो सकता है बच्चा चुप हो जाय। जैसे ही उसने बच्चे को छाती से लगाया बच्चा बड़े प्यार से दूध पीने लगा तथा दूध पीते – पीते उसे नींद आ गई। सुबह जब भाना की पत्नी गौसाला गई तो उसने देखा कि कई वर्षों से दूध न देने वाली गाय भी दूध दे रही है। यह देखकर वह अचम्भित हो गई और उस बच्चे को दिव्य शक्तियों से युक्त मानने लगी। भाना की पत्नी बच्चे का उचित पालन – पोषन करने लगी व बच्चे के घर में आने के साथ ही उनके घर की भी समृद्धी बढ़ने लगी। जब बच्चा बड़ा होने लगा तो वह बाहर जाकर दूसरे बच्चों के साथ खेलने लगा। वह बचपन से ही बड़ा शरारती व नटखट था। उसे गुलेल से

खेलना बेहद प्रिय था। इसलिए उसका नाम ग्वेल रख दिया गया। उसकी गुलेल का निशाना अचूक था। कभी वे पानी भर कर ला रही स्त्रियों के घड़े फोड़ देता था, कभी किसी को निशाना साध देता। दूसरे लोगों के साथ जब वह गाय चराने जाता तो अपनी गायों के मुँह जाली से बाँध देता। जिससे गुस्से में आकर उसकी गायें दूसरे की गायों को भी नहीं चरने देती। बाद में वह किसी के खेत के पास आकर अपनी गायों के मुँह खोलकर उनको चरा देता। ग्वेल की शरारतों से गाँव के लोग काफी तंग आ चुके थे। अतः उन्होंने भाना से कहा कि वह अपने बच्चे को काबू में रखे। भाना के बहुत समझाने पर भी ग्वेल की उद्दंडता कम नहीं हुई। अन्ततः गाँववालों ने कहा कि या तो तू अपने बच्चे को गाँव से निकाल या फिर हम तुझे गाँव की बिरादरी से निकाल देंगे।

भाना सोच में पड़ गया था। वह बिरादरी के लोगों को छोड़ सकता था। लेकिन ग्वेल से दूर नहीं रह सकता। एक दिन उसने गाँव छोड़ने की पूरी तैयारी कर ली और निश्चय किया कि अपनी पत्नी व ग्वेल के साथ कहीं और चला जाए तभी ग्वेल उनके पास आया और बोला मेरे कारण आप अपनी गाँव बिरादरी छोड़कर मत जाइये। इससे अच्छा है मैं ही चला जाता हूँ। वैसे भी एक न एक दिन तो मुझे जाना ही है। इस तरह उसने अपने जन्म से लेकर अब तक की सारी बात भाना और उसकी पत्नी को बताई।

ग्वेल ने भाना से कहा कि तुम मेरे लिए लकड़ी का एक घोड़ा तथा घोड़े के लिए लगाम, व काठी भी बनवा कर ले आओ। दूसरे दिन भाना वैसा ही घोड़ा बनवाकर उसे कन्धे पर रखकर घर पहुँचा। उसे देखते ही ग्वेल बोला पिताजी आप इसे कन्धे पर क्यों लाए हैं? भाना बोला बेटा लकड़ी घोड़े पर सवारी नहीं की जा सकती। ग्वेल बोला क्यों नहीं की जा सकती? आप इसे नीचे रखिये मैं आपको सवारी

करके बताता हूँ। और उसने अपने माता – पिता के चरण स्पर्श किये तथा घोड़े पर बैठा जैसे ही उसने घोड़े को इशारा किया घोड़ा सरपट दौड़ने लगा तथा अन्तिम प्रणाम कर वहाँ से निकल गया।

घोड़ा दौड़ते चम्पावत पहुँचा और उस स्थान पर पहुँचा जहाँ हलराय राजा की सातों रानियाँ पानी भर रही थी। वहाँ जाकर ग्वेल बोला हटो मेरे घोड़े को पानी पीने दो। यह सुनकर रानियों ने उसका उपहास किया और कहा क्या काठ का घोड़ा भी कहीं पानी पीता है। उत्तर में ग्वेल ने कहा क्या स्त्री भी कही सिलबट्टा जन्म सकती है? यह सुनकर छहों रानियाँ भयभीत हो गई तथा आपस में लड़ने लगी कि यह मेरा बेटा है। किन्तु छोटी रानी कुछ भी नहीं समझ पा रही थी। यह बात जब राजा के कानों में पड़ी तो उसने सब रानियों के साथ ग्वेल दरबार में बुला भेजा।

ग्वेल लकड़ी के घोड़े पर बैठकर दरबार में पहुँचा। उसे देख सभी चकित रह गये। फिर राजा ने सबसे पूछा कि बताओ यह किसका बेटा है? राजा का प्रश्न सुनकर सभी फिर उसे अपना पुत्र बताने लगी। तभी ग्वेल बोला महाराज यह सच है कि मैं आपका पूत्र हूँ। लेकिन मेरी माँ वही होगी जिसकी छाती से आज भी मेरे लिए दूध निकलेगा। यह सुनकर छहों रानियाँ अपने ढंग से प्रयत्न करने लगीं। लेकिन किसी की छाती से दूध न निकला सातवीं रानी जैसे ही उसके पास आयी बिना प्रयत्न किये ही उसकी छाती से दूध की नदी सी बह निकली।

अनहोनी देखकर सभी को विश्वास हो गया कि यह रानी कातिका का ही पुत्र है। माँ ने बेटे को आलिंगनबद्ध किया तथा ग्वेल ने राजा को सारी कहानी बताई। छहों रानियों ने अपना अपराध स्वीकार किया। राजा ने छहों को मृत्युदंड दिया। राजा के वृद्ध होने पर ग्वेल चम्पावत का राजा बना। ग्वेल को न्यायप्रिय व विवेकशील राजा के

रुप में जाना जाता है। आज कुमाऊँ में उसकी न्याय देवता के रुप में पूजा की जाती है। आज भी यदि किसी के साथ कुछ अन्याय होता है तो वह ग्वेल देवता के मंदिर में अर्जी करता है। लोगों का विश्वास है कि ग्वेलजी नीर – शीर व विवेक से काम करते है। ग्वेल के विशेष पड़ाव अल्मोड़ा शहर के नजदीक चितई, चमड़खान, ताड़ीखेत, चम्पावत तथा घोड़ाखाल (नैनीताल) आदि स्थानों पर है। इसके अलावा हर गाँव में ग्वेलजी की स्थापना होती है। ग्वेल जी को गोरिल्ला, गोलू, गोरिया आदि नामों से भी जाना जाता है।

सार :

इस कथा के माध्यम से भी यह बताया गया है कि भगवान की कृपा हो तो कुछ भी हो सकता है।

कहते हैं ''मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है।'' यह बात यहाँ सिद्ध हो जाती है कि छः रानिया छोटी रानी के बच्चे को मारने की बहुत कोशिश करती हैं परन्तु बाद में वही उसकी सजा पाती हैं तथा वह न्याय का देवता बनकर लोगों में पूज्यनीय बन जाता है और अभी भी उस राजा को न्याय का देवता ''गोल देवता'' के नाम से पूजते है तथा उनका बहुत बड़ा मंदिर पहाड़ (कुमाऊँ) में स्थापित है।

सात परि

एक गाँव में एक ब्राह्मण और उसकी पत्नी रहते थे। परिवार गरीबी में जीवन निर्वाह कर रहा था। एक दिन ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से कहा कि मैं तेरे मायके जाने की सोच रहा था तो पत्नी ने हामी भर दी। जाते समय पत्नी ने उसे सात उरद की दाल भरी हुई रोटियाँ दी और कहा जाते समय रास्ते में इन्हें खा लेना। सात भरवा रोटी लेकर ब्राह्मण चल दिया। चलते – चलते उसे एक जगह पर खाने की याद आयी

तो वह रोटियों का हिसाब लगाने लगा और अपनी आवाज में बुदबुदानें लगा। चार आज खाऊ या तीन आज खाऊ चार कल खा लूँगा। जिस जगह वह हिसाब लगा रहा था उस जगह पर सात परियाँ रहती थी। उन्हें लगा कि यह हमको खाने की बात कर रहा है। परियाँ उसके सामने आ गई और बोली तुम हमें मत खाओ। हम तुम्हें एक ऐसी चीज देंगे जिससे तुम खाने की कोई भी चीज माँगोगे तुम्हें मिल जाएगी। यह कहकर परियों ने उसे एक जादूई करछी दे दी। उसने जादूई करछी से पानी माँगा तो तुरन्त उसे पानी मिल गया यह देख उसे बडी प्रसन्नता हुई।

करछी लेकर वह वापस घर की ओर चल दिया। रात होने की वजह से वह एक बुढ़िया के घर में रुक गया। उसके पास जादुई करछी देखकर बुढ़िया समझ गई कि यह कोई साधारण करछी नहीं है। अतः रात में सोते समय उसने वह करछी बदल ली और उसके स्थान पर अपनी साधारण करछी रख दी। सुबह ब्राह्मण उठा और अपने घर की ओर चल दिया। घर पहुँचकर उसने अपनी पत्नी से कहा तेरे मायके वालों ने मुझे जादुई करछी दी है। और उसने ब्राह्मणी को वह साधारण करछी दिखाई तो वह समझ गई कि यह साधारण करछी है और उसने कहा कि यह तो साधारण करछी है। ब्राह्मण बोला उन्होंने तो कहा था कि यह जादुई करछी है तु जो भी खाने की चीज माँगेगा यह दे देगी। यदि ऐसा न हुआ तो तू फिर यहाँ आना। तु फिर से भरवा रोटियाँ बना मैं फिर वहाँ जाऊँगा। ब्राह्मणी ने फिर सात रोटियाँ बनाकर ब्राह्मण को दे दी और ब्राह्मण चल पड़ा। आज भी रास्ते में वह बुदबुदाये जा रहा था। चार आज खाऊँ या तीन आज चार कल खाऊँ परियों ने जब फिर उसकी आवाज सुनी तो वे उसके पास आकर बोली हमने तुमको जादुई करछुल दिया था। फिर भी तुम हमको खाने आ गये। ऐसा करो हमें मत खाओ। आज हम तुम्हें एक जादुई रजाई, गद्दा देंगे। जिसमें लेटते ही व्यक्ति अपने दुःख दर्द भूल कर मीठी नींद सोता है।

रजाई गद्दा लेकर वह वापस उसी बुढ़िया के घर रुका। उसने कहा कि आज मुझे ओढ़ने – बिछाने के लिए कुछ नहीं चाहिए बस, एक कोना घर का आराम के लिए दे दो। बुढ़िया बोली अरे बेटा तुम्हारे रजाई गद्दे नये है। इन्हें यहाँ बिछाओगे तो एक ही दिन में गन्दे हो जाऐंगे। मैं तुम्हें दूसरा बिस्तर दिये देती हूँ। जब ब्राह्मण को नींद आ गई तो बुढ़िया ने उसके रजाई गदे छुपा दिये। उसकी जगह पुराने बिस्तर लपेट कर रख दिये।

सुबह ब्राह्मण उठा और उसे अपना बिस्तर समझ उठाकर चल दिया। घर पहुँचकर जब उसकी पत्नी ने उसे खोला तो वह गुस्सा हो गई और बोली इतने गन्दे रजाई गद्दे कहाँ से लाये हो। उसमें तो जुँए दौड़ रहे है। ब्राह्मण बोला ये भी तेरे मायके वालों ने ही दीये हैं। तु ऐसा कर मुझे आखरी बार भरवा रोटियाँ बना कर दे। मैं जाकर देखता हूँ वो ऐसा क्यों कर रहे है?

इस बार भी वह बुदबुदाता जा रहा था। चार आज खाऊँ या तीन आज चार कल जब परियों ने उसकी आवाज सुनी तो वे उसके पास आकर बोली हमने तुम्हें इतनी अच्छी अच्छी चीजें दी है फिर तुम हमें खाने पर क्यों तुले हो? यदि हम तुम्हें कुछ और दे दें तो फिर वादा करो तुम कभी नहीं आओगे। ब्राह्मण बोला ठीक है मैं कभी नहीं आऊँगा। परियों ने कहा इससे पहले भी तुम यह कह चुके हो कि मैं अब नही आऊँगा लगता है तुम्हारे अन्दर लालच बार बार पनप रहा है। ब्राह्मण बोला क्या बताऊँ तुम यहाँ से जादुई वस्तुएँ देती हो घर पहुँचकर देखता हूँ तो वह साधारण चीज में तब्दील हो जाती है। परियों ने उससे पूछा जाते हुए तुम कहीं रुकते तो नहीं? ब्राह्मण बोला रात होने की वजह से मैं एक बुढ़िया के घर रुकता हूँ। हो सकता है वही बदल देती हो।

परियाँ बोली आज हम तुम्हें एक उड़नखटोला और मार डंडा देते है। उड़नखटोला तुम जहाॅ जाना चाहोगे तुम्हें वहाँ पहुँचा देगा और मार डंडे से जिसे भी मारने को कहोंगे। वह तब तक मारता रहेगा जब तक तुम उसे रोकोगे नहीं।

उडनखटोले में बैठकर वह सीधा बुढ़िया के घर पहुँचा। उसे देखकर वह खुश हो गई कि आज तो उड़नखटोला हाथ लगेगा। उड़नखटोले से उतरते ही ब्राह्मण ने मार डंडे से कहा कि जिसने भी मेरी जादुई करछी और जादुई गद्दा लिया है उसे मारो। ब्राह्मण का आदेश पाते ही डंडा बुढ़िया को मारने लगा काफी मार खाने के बाद भी जब डंडा रुका नहीं। तब बुढ़िया ने कबुला कि उसने ही वह सब जादूई चीजें ली है और वह उन्हें वापस भी कर देंगी। बुढ़िया से सारी चीजें लेकर उसने उड़नखटोले में रखा और घर वापस आ गया। घर पर जब पत्नी ने वो सब जादुई चीजें देखी तो वह खुशी से फूली न समाई।

सार :

इस कथा में भी परियों की बातें बतायी गयी है कि कुमाऊँ में परियों को देवी के रुप में पूजा जाता है तथा वह भी वहाँ अभी तक घूमती है तथा लोगों की मदद करती है और लोग उनके मंदिर बनाकर नियमित उनकी पूजा करते हैं।

इसमें परियों के प्रति उनकी श्रद्धा – भावना बतायी गयी है तथा वह जो भी कहते हैं उनकी समय – समय पर वह सहयता करती रहती हैं।

लाल सुङरि

एक घर में एक बुढ़िया और उसके दो बेटे रहते थे। बड़े बेटे का विवाह हो चुका था, छोटा बेटा अल्पबुद्धि था सो वह अविवाहित ही था। एक बार उसकी भाभी अपने मायके गई हुई थी। कुछ दिन बाद माँ ने अपने छोटे बेटे से उसकी भाभी को

लाने के लिए कहा और जाते समय उसे पूरी की टोकरी देते हुए कहा कि इसे अपनी भाभी के घरवालों को दे देना।

जब वह रास्ते में जा रहा था तो उसने अपनी परछाई को देखकर समझा कि कोई उसके पीछे आ रहा है। उसने कहा कि भाई क्या तुम्हें भूख लगी है जो मेरे पीछे आ रहे हो, चलो मैं तुम्हें खाने के लिए पूरियाँ देता हूँ। इस तरह वह एक – एककर पूरियाँ पीछे की तरफ फेंकता जाता। धीरे – धीरे शाम हो गई उसने पीछे देखा तो उसे कुछ दिखाई नहीं दिया उसे लगा पीछे आने वाले का पेट भर गया है। उसकी टोकरी खाली हो चुकी थी। अँधेरा होने पर जब वह अपनी भाभी के घर पहुँचा तो चुपके से पसाले के नीचे दुबक कर छिप गया (पसाला – घर के पीछे बर्तन इत्यादि धोने के लिए बनाया गया स्थान) रात को जब उसकी भाभी खाने के बाद हाथ धोने के लिए वहाँ आयी तो उसके हाथों से निकला पानी उसके सिर के उपर पड़ा। तो वह चुपके से बोला अरे पसाले मत टपक मैं कोई चोर थोडी ही हूँ। मैं तो अपनी भाभी को ले जाने के लिए आया हूँ। जब उसकी भाभी ने आवाज सुनकर जब नीचे देखा तो पाया यहाँ तो उसका देवर दुबका बेठा है। वह उसका हाथ पकड़कर उसे अन्दर ले गई और पूछा इस टोकरी में क्या लाए थे। उसने कहा माँ ने आप सब लोगों के लिए पूरियाँ भेजी थी। लेकिन रास्ते में एक भूखा आदमी मेरे पीछे आ रहा था मैंने सब पूरियाँ उसे खिला दी।

दूसरे दिन वह भाभी को लेकर घर वापस आ गया। घर आकर देखा कि उसकी माँ बीमार पड़ी है। घर में काम होने की वजह से उसने कहा भाई माँ बीमार है कई दिन से उसने नहाया नहीं है। उसके पीठ पर कुदाल से खोदने जैसा मैल (अतिसयोक्ती) (अर्थात् बहुत ज्यादा मैला) जमा है मैं और तेरी भाभी खेत में जा रहे हैं अतः तू माँ को गरम पानी से नहलाकर मैल निकाल देना।

भाई और भाभी के खेत में जाने के बाद उसने खूब गरम पानी किया और माँ को नहलाने ले गया तथा खूब सारा गरम पानी उसके सिर पर डालकर कुदाल उसकी पीठ पर चलाने लगा उसकी माँ चीखती रही कि तू ये क्या कर रहा है? क्या मुझे मार डालेगा? पर उसने बुढ़िया की एक न सुनी और कहा कि भाई ने मुझसे ये करने को कहा है इसलिए मैंने यदि ये नहीं किया तो वह मुझसे नाराज हो जाएगा।

शाम को जब बड़ा बेटा और उसकी पत्नी वापस आये तो उन्होंने उससे पूछा कि तुने माँ को नहलाया क्या? उसने कहा हाँ माँ नहा – धोकर आराम से सो रही है। जब बहुत देर तक माँ उठी नहीं तो बड़े लडके ने जाकर माँ की रजाई उठाई तो देखा माँ लहुलुहान मरी पड़ी है। उसने अपने भाई से कहा कि तुने तो माँ को मार दिया है ये क्या किया तुने? उसने कहा कि मैंने कहाँ मारा माँ को आपने कहा था कि माँ को गरम पानी से नहलाकर उसकी पीठ में कुदाल से खोदने जैसा मैल जमा है उसे निकाल देना। मैंने वैसा ही किया। जब उसे नींद आ गई तो उसे सुला दिया बड़े भाई को सारी बात समझ आ गई।

बड़े भाई ने माँ की अर्थी तैयार करी और उससे कहा कि माँ को शमशान ले जाना है और तुझे भी माँ को कन्धा देना होगा। वो बोला पहले मुझे सोयाबीन भूनकर दो। (कुमाऊँ में सर्दी के सीजन में सोयाबीन को भुनकर मूँगफली के तरीके से खाया जाता है।) बड़े भाई ने उसे समझाया कि आज माँ मरी है इसलिए आज कुछ नहीं खाते। लेकिन वो नहीं माना तो बड़े भाई की पत्नी ने उसे सोयाबीन भूनकर दे दिये। सारे रास्ते वह सोयाबीन खाते शमसान गया।

माँ के मरने के काफी दिनों बाद उसने अपने भाई से शादी करने की जिद करी, भाई ने फिर उसे समझाया कि तुझे कुछ अकल तो है नहीं फिर तुझसे शादी

कौन करेगा? लेकिन उसके दिमाग मैं शादी की बात आ गई थी। अतः वह रोज शादी की बात को लेकर भाई से जिद करता, परेशान हो कर भाई ने उसका विवाह करवा दिया।

शादी के बाद अचानक एक दिन उसने अपने घर में आग लगा दी। सब गाँव वाले इकट्ठे हो गये। उन्होंने कहा कि इसे या तो गाँव से निकालो या तो बाँधकर रखो। आज इसने अपने घर में आग लगाई है। कल को हमारे घरों में भी लगा देगा तो कौन जिम्मेदार होगा, भाई उससे दुःखी तो था पर वह उससे प्यार बहुत करता था। अतः उसने उसे घर से निकालने के बजाय एक कमरे में बंद कर दिया।

छोटे की पत्नी बहुत समझदार थी। एक दिन उसने बड़े भाई व उसकी पत्नी से कहा कि आप लोग खेतों का काम संभालिये इन्हें मैं संभाल लूँगी। धीरे – धीरे उसने अपने पति से अपने घर के कामों में मदद लेनी शुरु करी और गलती करने पर प्यार से उसे समझाती। पत्नी के प्यार व समझदारी भरे व्यवहार से वह ठीक होने लगा। उसके बड़े भाई व भाभी भी यह देखकर काफी खुश थे। उन्होंने इसका सारा श्रेय भाई की पत्नी को दिया। इस तरह प्यार व समझदारी से एक अल्पबुद्धि भी सामान्य व्यक्ति हो गया।

सार :

इस कथा के माध्यम से सामाजिक परिवेश को बताया गया है कि एक सुअर को खाने के लिए भाई – भाई को नहीं पूछता। तथा दीदी के घर रहने जाता है तो वह भी अत्याचार करती है मगर अच्छे इन्सान के साथ अच्छा ही होता है वह भैंसों की मदद करती है और वह धनवान व्यक्ति बन जाता है। तब उसकी दीदी को

पछतावा होता है भैंस की घण्टी उसके अत्याचारों की कहानी कहती है। वह मृत्यु को प्राप्त हो जाती है।

यह कथा सामाजिक कथा से जुड़ी है इसमें बताया गया है कि बहन – भाई तथा भाई – भाई भी एक दूसरे का साथ मुसिबत में नहीं देते हैं मगर कुछ ऐसे अच्छे लोगों की वजह से ही दुनियाँ टीकी हुई है।

काफल पाको

चैत के महीने में काफल पकने लगते हैं। लाल – लाल, भूरे – भूरे रसीले काफलों से लदे पेड़ों पर चिड़ियाँ चहकने लगती हैं।

इन्हीं में से एक चिड़िया 'काफल पाको, मैं नी चाखो' कह कर वातावरण में उदासी भर देती है। जब तक जंगलों में काफल रहते हैं तब तक इस चिड़िया का स्वर जंगलों में गूँजता रहता है।

इस संदर्भ में एक कथा प्रचलित है–

एक बार की बात है, जब काफल पक रहे थे तब तक एक स्त्री प्रातःकाल जल्दी उठकर जंगल गई। जंगल से टोकरी भरकर काफल चुन – चुनकर ले आई। घर वापस लौटते – लौटते दोपहर हो गई। गाँव की स्त्रियों को अवकाश कहाँ रहता है? घर का काम निबटाया तो खेतों का काम याद आ गया।

खेतों की ओर जाते समय उसने अपनी बिटिया से कहा – ''बेटी ! ये काफलों से भरी टौकरी रखी है, इसका ध्यान रखना। इनमें से काफल खाना मत, मैं वापस आने पर अपने आप तुम्हें दूँगी।'' माँ के जाने के बाद छोटी बच्ची काफलों की देख – रेख करती रही। रसीले काफल देखकर मन ललचाया भी किंतु माँ की बात

का ध्यान रखकर उसने एक भी दाना मुँह में न डाला। चैत की तेज धूप और गरमी के कारण काफल सूख गए और टोकरी में कुछ नीचे दब गए।

जब माँ वापस आई तो उसने देखा कि काफल तो कम हैं। उसने बेटी से पूछा – 'इस टोकरी के काफल तुमने खाए?' लड़की ने सच बोला कि उसने एक भी दाना नहीं खाया।

माँ को विश्वास न हुआ। थकी – हारी माँ ने अत्यधिक क्रोध में आकर अपनी निरपराध बच्ची को इतनी जोर से मारा कि वह नन्हीं बच्ची अपनी जान गँवा बैठी।

सायंकाल ठंडी बयार और माँ के आँसुओं के संस्पर्श से काफल फिर से ताजे हो गए। वही टोकरी जो आधी दिखाई दे रही थी, फिर से भरी – भरी दिखाई देने लगी। माँ यह देखकर मन ही मन पछताने लगी। उसे अपनी निर्दोष बच्ची को मार डालने का इतना गहरा आघात लगा कि 'पुर पुतई पूरै – पूर' (पूरे हैं प्यारी बिटिया, पूरे हैं) कहते – कहते उसके प्राण – पखेरू उड़ गए। ये दोनों माँ – बेटी पक्षी बन गए।

चैत के महीने में जब – जब काफल पकते हैं, एक चिड़िया करुण स्वर में कूकती है –

'काफल पाको, मैं नी चाखो।' (काफल पक गए पर मैंने नहीं चखे)

तभी दूसरी चिड़िया प्रत्युत्तर देती है–

'पुर पुतई पूरे – पूरे।'

और ये स्वर वायु – मंडल में बिखर जाते हैं।

लकड़ी जले तो आँच पीछे ही आए

एक थी सास, एक थी बहू। सास बहुत वृद्ध हो चुकी थी। घर का काम – काज बहू करती थी। सास के हाथ – पैरों की शक्ति क्षीण हो गई थी। अपना काम करने के लिए भी सास को दूसरों से सहायता लेनी पड़ती थी। बहू सास की जरा भी परवाह न करती थी। बुढ़िया सास की सेवा करने वाला कोई न था।

एक दिन वृद्धा सास की पीठ में खुजली हुई। सास ने बहू से कहा – 'अरी बहू, जरा इधर आकर मेरी पीठ तो खुजला दे, बड़ी देर से बेचैनी हो रही है?'

पहले तो बहू ने न सुनने का बहाना कर दिया पर जब सास बार – बार वही बात कहने लगी तो बहू ने खीज कर अपने पैर से सास की पीठ खुजला दी। बहू को सास की पीठ में हाथ लगाने में घिन लगती थी। जब – जब सास पीठ खुजला देने को कहती तब – तब बहू अपने पैर से यह काम कर देती।

समय बीतते क्या देर लगती है। बहू ने अपने बेटे को पाल – पोसकर बड़ा किया और बेटे का विवाह कर बहू ले आई। घर की सारी जिम्मेदारी बहू को सौंप कर वह निश्चिन्त हो गई।

एक दिन उसने बहू से कहा – 'बहू अब तो मेरे हाथ – पैर चलते नहीं, जरा मेरी पीठ खुजला देती तो आराम आ जाता।' बहू ने कहा – 'सास जी मैं जमीन पर कैसे बैठूँ? खड़ी रहकर मेरे हाथ आपकी पीठ तक पहुँचे कैसे? हाँ, पाँव पहुँच सकता है। कहो तो पाँव से खुजला दूँ।'

सास को पुराना समय याद आ गया। उसने सोचा, मेरी बहू आज मेरे लिए वही कर रही है जो मैंने अपनी सास के लिए किया था। सच है – लकड़ी जलेगी तो आँच तो पीछे की ओर ही आएगी।

कट्टडी मुआ

एक बुढ़िया थी, उसका एक नाती था। नाती का नाम कुटड़ी मुया था। उनके यहाँ का राजा कोढ़ी था। अतएव राजा ने अपने राज्य के प्रत्येक युवक की एक दिन छोड़कर मालिश करने की बारी लगाई थी। राजमहल से जिस व्यक्ति के नाम की पुकार होती उसे ही राजमहल जाना होता था। यदि वह व्यक्ति विलम्ब से पहुँचता था या नहीं आता था तो उसे दण्डित किया जाता था। वैसे राजा अत्यन्त दयालु था अपनी प्रजा के सुख – दुःख का ध्यान रखता था और जब भी कोई याचक उसके दरबार में पहुँचता था तो वह उसे निराश नहीं करता था। यही कारण था कि प्रजाजन सदैव उसकी सेवा को तत्पर रहते थे, किन्तु वह अपराधी को कभी क्षमा नहीं करता था।

एक दिन शिवजी ने पार्वती जी से कहा मैं पृथ्वी पर भ्रमण के लिए जा रही हूँ शीघ्र ही लौट आऊँगा। पार्वती जी बोली – मैं भी आपके साथ चलूँगी। शिवजी ने कहा यदि तुम्हारी इच्छा तो चलो। दोनों ने जोगी जोगिन का वेष धारण किया और चल दिए। जाते – जाते दोनों बुढ़िया के घर पहुँचे। शिवजी ने बुढ़िया से कहा – माई यहाँ रहने को स्थान मिलेगा? बुढ़िया ने मना कर दिया, पर बुढ़िया के नाती ने उन्हें रहने को स्थान दे दिया। दादी अपने नाती से बोली – हमारे रहने को तो यहाँ जगह है नहीं तूने इन्हें भी रख लिया। नाती बोला – दादी जैसे हम रहते हैं वैसे ही एक कोने में ये भी रह लेंगे।

बुढिया के घर में ऐसा दारिद्रय था कि उसका नाती चाहे एक गाँव से माँगकर लाए अथवा दो गाँवों से; किन्तु रोटी तीन से अधिक नहीं बनती थी। उस दिन भी रात में रोटी बनाकर बुढ़िया ने नाती से कहा – आ नाती रोटी खा ले। नाती बोला –

दादी और दिनों डेढ़ – डेढ़ रोटी खाते हैं आज एक – एक खा लेंगे और एक रोटी इन्हें दे देंगे। दादी बड़बड़ाती हुई कहने लगी – न जाने कहाँ से आ गये ये जोगी नहीं देंगे इन्हें खाना – वाना। नाती बोला – दादी तू अपने हिस्से की रोटी खा ले और मेरे हिस्से की रख दे मैं थोड़ी देर में खा लूँगा। जब बुढ़िया खाना खाकर बर्तन माँजने बाहर गई तो नाती ने अपने हिस्से में से आधी रोटी ले ली और एक रोटी जोगी को देकर बोला – आधी – आधी रोटी आप दोनों भी खा लीजिए।

खाना खाने के बाद जोगी ने पूछा – बच्चा क्या भंगड़ी मिलेगी। कुटड़ी मुया ने हाँ कहकर सुल्फे में भंगड़ी भरकर दे दी। थोड़ी देर में जोगी ने कहा – बच्चा सुल्फे में कोयले और डाल दे। नाती ने जोगी के हाथ से सुल्फा लेकर उसमें कोयले डाले और जोगी को दे दिया। बुढ़िया बोली – जोगी तूने तो मेरे नाती को परेशान कर रख दिया है मुझे ऐसा लग रह है कि आज रात भर तू इसे सोने नहीं देगा और सुबह उसे राजमहल भी जाना है। वह नाती से बोली – मैंने तुझसे पहले ही कहा था कि इन जोगियों को घर में रहने को जगह मत दे, पर तूने मेरी बात नहीं मानी, अब इनको बाहर निकाल। नाती बोला – कोई बात नहीं दादी, एक ही रात की तो बात है। शिवजी कुटड़ी मुया की परीक्षा ले रहे थे क्योंकि वह शिवजी का भक्त था। उन्होंने कुटड़ी मुया से कहा – बच्चा क्या नींद आ गई सुल्फे में थोड़ी भंगड़ी और भर दे। नाती उठा और सुल्फे में भंगड़ी भरकर जोगी को दे दिया और सो गया। प्रातःकाल उठकर जोगी ने कहा – बच्चा हमें यहाँ अच्छा लग रहा है हम आज भी यहीं रूक जायें? कुटड़ी मुया ने कहा – हम तो आपको भर पेट खिला भी नहीं पा रहे हैं यदि आपको हमारी इस झोपड़ी में अच्छा लग रहा है तो रूक जाइए। इतने में राजमहल से कुटड़ी मुया के नाम की पुकार हुई; ठीक उसी समय जोगी ने उससे सुल्फे में भंगड़ी भरने को कहा। कुटड़ी मुया बोला – हमारे देश का राजा कोढ़ी है उसे नहलाकर

मालिश करने की आज मेरी बारी है, मालिश करते – करते जब राजा को नींद आ जाएगी तो मैं आ जाउँगा। जोगी बोला ठीक है पर जाते – जाते जल्दी से सुल्फे में भंगड़ी तो भरकर दे जा। कुटड़ी मुया जोगी से मना नहीं कर पाया। उसे यह भी चिन्ता हो रही थी कि कहीं देर न हो जाए वरना राजा नाराज हो जाएगा। उसने सुल्फे में भंगड़ी भरी और राजमहल चला गया।

कुटड़ी मुया राजा की मालिश करके भिक्षा मांगने दूसरे गाँव चला गया। आज उसे और दिनों से अधिक भिक्षा मिली अतः रोटियाँ भी चार बनी। दादी ने प्रसन्न होकर उससे कहा – आज हम दो – दो रोटियाँ खाएँगे। कुटड़ी मुया बोला – नहीं दादी एक – एक रोटी खाएँगे और एक – एक रोटी जोगी – जोगिन को दे देंगे, किन्तु दादी यह बात मानने को तैयार नहीं हुई। कुटड़ी मुया बोला – अच्छा दादी तू खा ले और मेरे हिस्से की रोटियाँ रख दे। नाती ने आज भी अपने हिस्से में से एक रोटी जोगीन को दे दी।

तीसरे दिन प्रातःकाल राजमहल से कुटड़ी मुया के नाम की पुकार हुई। जैसे ही वह जाने लगा तो जोगी ने उसे पुकारकर कहा – बच्चा जाते – जाते सुल्फे में भंगड़ी भरकर दे जा। बुढ़िया नाती से बोली ये जोगी तुझे देर करवा कर मरवा देगा। रातभर तो धूनी जलाकर भंगड़ी पीता रहता है न रात में सोने देता है न सुबह जाने देता है। आज मैं इसे यहाँ नहीं रहने दूँगी यह कहकर बुढ़िया रसोई से चिमटा गरम करके ले आई और जोगी – जोगिन को मारने दौड़ी। नाती ने उसे रोकते हुए कहा – दादी तू इन्हें मत मार ये स्वतः ही चले जाएँगे। यह देखकर जोगी – जोगिन रूपधारी शिव – पार्वती दोनों हँसने लगे। जैसे ही कुटड़ी मुया जाने के लिए आगे बढ़ा तो जोगी ने उसे फिर पुकारकर कहा – बच्चा यहाँ आ सुल्फे में थोड़े कोयले ड़ाल दे। जब वह सुल्फे में कोयले ड़ाल रहा था तो जोगी ने पूछा – आज कहाँ जा रहा है? कुटड़ी मुया बोला

– आज भी राजा की मालिश करने जा रहा हूँ। जोगी ने उसे अपने समीप बुलाकर कहा – अपना हाथ इधर कर। कुटड़ी मुया ने अपना हाथ जोगी की ओर किया तो जोगी ने उसकी हथेली में भभूत रखकर कहा – इसे फेंकना मत नहलाने का बाद इससे राजा की मालिश करना, इससे राजा को कोढ़ ठीक हो जाएगा। इतने में बुढ़िया बोली – नाती ये जोगी तुझे क्या दे रहा है? इत्र – फलेल लगाने वाले राजा के शरीर में यदि राख लगाएगा तो राजा तुझे मरवा देगा।

कुटड़ी मुया राख को मुट्ठी में रखकर चल दिया। रास्ते में वह यही सोचते जा रहा था कि – दादी तो कह रही थी यदि तूने राख से मालिश की तो राजा तुझे मरवा देगा और जोगी कह रहा था इससे राजा का कोढ़ ठीक हो जाएगा। वह किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया। तब तक वह राजमहल के द्वार पर पहुँच गया और अन्ततः उसे भभूत फेंक दी, किन्तु थोड़ी सी राख उसकी हथेली की रेखाओं में फँसी रह गई। उसने राजा को स्नान कराकर मालिश की। जब राजा को नींद आ गई तो वह भिक्षा माँगने चला गया। उसने नहलाने और मालिश करने से राजा को आराम मिला।

अगले दिन बिना बारी के ही उसके नाम की पुकार लगने लगी; क्योंकि कुटड़ी मुया की मालिश से राजा को आराम मिला था। जब दादी और नाती ने आवाज सुनी तो.वे सोचने लगे – राख लगे हाथों से नहलाने और मालिश करने के कारण राजा दण्डित करने के लिए बुला रहा होगा। बुढ़िया क्रोध से रसोई में गई और जोगी को मारने के लिए करछुल उठा लाई। नाती ने उसे रोकते हुए कहा – दादी इन्हें मत मारो इसमें इनकी क्या गलती है? जोगी – जोगिन के रूप में बैठे शिव – पार्वती यह देखकर हँस रहे थे। जब कुटड़ी मुया जाने लगा तो शिवजी ने सरस्वती से कहा – तू जाकर इसकी वाणी में बैठ जा। राजा इससे वरदान माँगने को कहेगा तो तू इसे बोलने मत देना। कुटड़ी मुया डरते – डरते महल पहुँचा तो राजा ने उसे अपने पास बुलाकर

पूछा – कल मालिश करते समय तूने कोई जड़ी – बूटी तो नहीं मिलाई थी? वह चुप रहा। राजा बोला – तुझे जो भी माँगना है माँग ले पर आज भी उसी से मेरी मालिश कर; क्योंकि उससे मुझे आराम मिला है। कुटड़ी मुया बोला – महाराज मुझे घर जाने दीजिए मैं लेकर आता हूँ।

कुटड़ी मुया घर पहुँचा और उसने दादी को सारी बातें बता दी और बोला अब मैं क्या करूँ? जोगी ने उसे परेशान देखकर कहा – तू चिन्ता मत कर यह भभूत ले जा आज इसे फेंकना मत, इसी से राजा की मालिश करना। यह कहकर जोगी ने उसे भभूत दे दी। बभूत लेकर वह राजा के पास पहुँचा और उससे राजा की मालिश की। इससे राजा को और भी आराम मिला। राजा ने कुटड़ी मुया से कहा – मैं तुझसे अत्यन्त प्रसन्न हूँ, तुझे जो भी चाहिए मुझसे मांग ले; किन्तु वह कुछ भी नहीं माँग पाया क्योंकि शिवजी के आदेश से सरस्वती जी उसकी वाणी में विराजमान थी। वह चुपचाप अपने घर लौट आया।

रात में जोगी ने कुटड़ी मुया से पूछा – बच्चा राजा ने तुझसे क्या कहा? वह बोला – राजा मुझसे अत्यन्त प्रसन्न था, उसने मुझसे कहा जो चाहिए माँग ले पर मैंने कुछ भी नहीं माँगा। जोगी ने उससे कहा – तू कल फिर राजमहल जाना और राजा से कहना – अपनी पुत्री का विवाह मुझसे कर दीजिए। जोगी की बात सुनकर दादी और नाती दोनों भौचक्के रह गये। दादी सोचने लगी – कहाँ हम भिक्षा माँगकर खाने वाले और यह जोगी राजा की बेटी से मेरे नाती के विवाह की बात कर रहा है। यह अवश्य ही मेरे नाती को मरवाना चाहता है।

अगले दिन भी प्रातःकाल राजमहल से कुटड़ी मुया को आवाज लगाई गई। जब वह वहाँ पहुँचा तो राजा को पूर्णतः स्वस्थ्य देखकर वह चकित रह गया। राजा ने

उससे कहा – तुझे जो माँगना है माँग ले। वाणी में सरस्वती विराजमान थी अतः कुटड़ी मुया बोला – अपनी पुत्री का विवाह मुझसे कर दीजिए। राजा हँसकर बोला मैंने तुझे वचन दिया है अतः मैं अपनी पुत्री का विवाह तुझसे अवश्य करूँगा; किन्तु मेरी भी एक शर्त है – बारात में शिव – पार्वती सहित सभी देवी – देवता आएँगे और वर को ऐरावत हाथी में बैठकर आना चाहिए। राजा ने सोचा यह सुनकर वह डर जाएगा और कोई दूसरा वरदान माँग लेगा; किन्तु वाणी में बैठी सरस्वती ने उससे हाँ कहला दिया।

घर लौटते समय कुटड़ी मुया सोच रहा था मैंने हाँ तो कह दिया; किन्तु वह सब होगा कैसे? घर पहुँचकर उसने महल में हुई सारी बातें जोगी को बता दी। उस समय शिवजी चुप रहे किन्तु प्रातःकाल उठकर बोले – अच्छा बच्चा अब हम जाते हैं। तू चिन्ता मत करना तेरे विवाह में राजा का कहा सब हो जाएगा और एक सप्ताह के भीतर ही तेरा विवाह भी हो जाएगा। यह कहकर जोगी – जोगिन का रूप धारण किये हुए ही शिव – पार्वती वहाँ से चले गये।

शिव लोक जाकर शिवजी ने अपने दो गणों को राजा के महल में कुटड़ी मुया की और से मँगनी के लिए भेजा। दोनों देखने में छोटे – छोटे से थे। जब वे राजमहल पहुँचे तो राजाने उनका खूब आदर – सत्कार किया। उन्होंने राजा को विवाह का शुभ मुहूर्त बताया कि बारात आपकी शर्त के अनुसार सभी लोग आएँगे। सुनकर राजा चकित रह गया। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि ऐसा हो सकता है। शिव – पार्वती उसकी स्थिति देखकर शिव लोक में बैठे हँसने लगे।

जब खाने का समय आया तो वास्तविकता राजा की समझ में आ गई क्योंकि खाने का सभी सामान समाप्त होने की स्थिति में आ गया था और दोनों छोटे से

दिखने वाले गण ऐसे खा रहे थे जैसे अभी अभी खाने बैठे हों। यह देखकर राजा – रानी और मंत्री सभी परेशान हो गये। राजा ने मन ही मन शिवजी का स्मरण किया तो पार्वती जी बोली – प्रभु राजा पर दया कीजिए। शिव जी ने भभूत की फूँक मारी तो भंडार में रखे सभी बर्तन पूर्ववत् भ़र गये। यह चमत्कार देखकर महल में रहनेवाले सभी लोग स्तब्ध रह गये।

दूसरे दिन बारात भी आ गई। वर ऐरावत हाथी पर विराजमान था और सभी देवी देवता बाराती बनकर पधारे थे। शिवजी की कृपा से एक भिखारी का विवाह राजकुमारी से हुआ। विवाह के बाद सभी देवी – देवता तिरोहित हो गये, किन्तु शिव – पार्वती ने जोगी – जोगिन के रूप में प्रकट होकर दादी और नाती दोनों को दर्शन दिए। उन्हें देखकर दादी और नाती दोनों स्तब्ध होकर देखते ही रहे। शिवजी ने कहा – हम तुम्हारी परीक्षा लेने तुम्हारे घर आए थे। किन्तु अत्यन्त निर्धन होकर भी कुटड़ी मुया के ह्रदय में जो त्याग और सेवा – भाव विद्यमान था उसी के कारण आज यह वरदान मिला है। यह कहकर वे तिरोहित हो गये। कुटड़ी मुया के कारण ही सभी को देवी – देवताओं के दर्शन हुए और राजा का कोढ़ भी ठीक हो गया। वहाँ उपस्थित सभी जन उसका गुणगान करते हुए अपने – अपने घर चले गये और राजा ने अपना आधा राज्य अपने दामाद (कुटड़ी मुया) को दे दिया।

सार :

इस कहानी में मनुष्य की उदारता तथा वहीं दूसरे ओर एक ही प्रकार की स्थिति में दूसरे मनुष्य का व्यवहार बताया गया है कि वह सिर्फ अपने बारे में सोचता है। **अतिथि देवो भवः** हमारे ग्रंथों में कहा है परन्तु यदि घर में दो मनुष्यों का ही पर्याप्त भोजन न हो और उस पर दूसरे दो का भोजन जुटाना बहुत मुश्किल हो जाता

है। परन्तु यदि अतिथि का सम्मान करके भोजन जितना भी हो मिल बाँटकर खायें तो अच्छाई का नतीजा अच्छा ही होता है। जैसा कि हमारे बड़े – बूढ़े कहते आये हैं ''नेकी कर दरिया में डाल'' यह ऐसे ही नहीं कहा।

इस कथा से हमें ज्ञात होता है कि यदि हम किसी को एक हाथ से देते हैं तो भगवान हमें दोनों हाथों से लौटाता है।

घागरिक टाल

एक गाँव में एक बूढ़ा और एक बुढ़िया अपने इकलौते बेटे के साथ रहते थे। बेटा जवान हुआ, तो उन्होंने पास के गाँव की सुशील और रूपवती कन्या देखकर उसका विवाह कर दिया। चारों हँसी – खुशी से रहने लगे। फाल्गुन के महीने में भाई उसे भिटौली देने आया, उसकी सास ने पूरे गाँव में भिटौली की मिठाई बाँटी और अगले दिन भाई अपने घर लौट गया।

काले महीने (चैत्रमास) में ससुर उसे मायके पहुँचाने गया कि अचानक उसके ससुराल के गाँव में महामारी फैल गई। जिससे पूरा गाँव उडड़ गया। मायके में होने के कारण मात्र बहू व उसके ससुर ही जीवित बचे। ससुर व बहू दोनों अपने घर जाना चाहते थे, किन्तु किसी ने भी उन्हें नहीं जाने दिया। कुछ दिनों के बाद ससुर और बहू जिद करके अपने गाँव लौट आए। गाँव को उजड़ा देखकर दोनों बहुत दुःखी हुए।

एक दिन ससुर ने अपनी बहू से कहा – बहू तू अभी जवान है, अतः दूसरा विवाह कर ले, क्योंकि मैं तो बूढ़ा हो गया हूँ। न जाने कब परलोक चला जाऊँ। तब तेरी देखरेख कौन करेगा? मेरे दिन तो जैसे – तैसे कट ही जाएँगे। ससुर की बात सुनकर बहूने कहा – ससुर जी, इस गाँव को फिर से बसाने के लिए आप और मैं विवाह कर लेते हैं। बहू के मुँह से यह बात सुनकर ससुर उसका मुँह देखने लगा और

बोला – अरे बोलने से पहले कुछ तो सोच लेती। बहू बोली – बहुत सोचने समझने के बाद ही मैंने यह बात कही है। देखिए, यदि मैं यह गाँव छोड़कर कहीं और चली गई, तो यह गाँव उजड़ा ही रह जाएगा। इसीलिए मैं आपसे विवाह करना चाहती हूँ, किन्तु लोक – लाज के कारण बूढ़ा किसी भी तरह बहू से विवाह करने को तैयार नहीं हुआ। तब बहू बोली – यदि मैं विवाह करूँगी तो आपके साथ ही करूँगी, अन्यथा किसी से भी नहीं करूँगी। बहू को समझाते हुए ससुर ने कहा – यह तो सोच, यदि मैंने तुझसे विवाह किया, तो आस – पास के गाँव वाले क्या कहेंगे? ससुर की बात सुनकर बहू ने मन ही मन निश्चय किया कि मैं इनके मन से लोगों का भय निकालकर इनके साथ ही विवाह करूँगी, तभी यह गाँव पुनः बस सकेगा।

एक दिन जब ससुर बाजार जाने को तैयार हुआ, तो बहू ने चुपचाप उसके कोट में पीछे से लहंगे का टल्ला लगा दिया, क्योंकि पेटीकोट या लहंगे का टल्ला लगाना पुरुष के लिए शर्मनाक बात मानी जाती थी। कोट पहनकर ससुर चला गया। जब वह बाजार से लौटकर आया, तो बहू ने पूछा – ससुर जी आज आपको देखकर लोग हँसे तो नहीं? कोई आपको बदनाम तो नहीं कर रहा था? ससुर ने कहा – कोई मुझे देखकर क्यों हँसता? कोई क्यों बदनाम करता? मैंने किसी का क्या बिगाड़ा है? बहू ने ससुर की बात को दिमाग में बसा लिया और बोली – अच्छा तो इसका अर्थ यह हुआ कि यदि आप किसी का कुछ बिगाड़े बिना कोई काम करेंगे, तो किसी को कोई आपत्ति नहीं होगी। यह कहकर बहू ने ससुर को कोट उतारकर उसे लहंगे का टल्ला दिखाते हुए कहा – देखिए ये क्या है? इसमें आप अपनी बदनामी समझते थे और सोचते थे, ऐसा करने से लोग बदनाम करेंगे। यद्यपि आज आप लहंगे के कपड़े का टल्ला लगा हुआ कोट पहनकर गये, फिर भी आपसे न तो किसी ने कुछ कहा और न ही आपका उपहास किया। ससुर ने बहू से पूछा – तूने ऐसा क्यों किया और

ये सब बातें मुझे क्यों सुना रही है? बहू बोली – मैं आपसे यही कहना चाहती हूँ, कि यदि आपने मुझसे विवाह भी कर लिया, तो कोई भी कुछ नहीं कहेगा।

अन्ततः एक दिन ससुर ने बहू के विचारों से सहमत होकर उससे विवाह कर लिया। कहा जाता है कि उन्हीं की सन्तानों से वह उजड़ा हुआ गाँव पुनः बस गया।

सार :

इस कथा में एक मनुष्य ने अपने गाँव को बचाने के लिए कितनी बड़ी कुर्बानी दी वह बताया गया है कि महामारी से सारा गाँव नष्ट हो गया था परन्तु अपने गाँव, धर्म को बचाने के लिए बहु ने ससुर से शादी की तथा अपने वंश को सुरक्षित रखकर अपने सामाजिक धर्म का पालन किया।

यह मनुष्यता की जीत का जीता – जागता उदाहरण है।

गरीब ब्राह्मण

एक ब्राह्मण था उसकी एक बेटी थी। ब्राह्मण अत्यन्त निर्धन था। उसकी पत्नी बहुत आलसी थी। न पूजा–पाठ करती थी और न बाहर – भीतर की सफाई। प्रातः उठकर नहाए – धोए बिना ही रोटी खा लेती थी। ब्राह्मण उससे कहता था – तू पूजा – पाठ भी नहीं करती, प्रायः उठकर नहाए – धोए बिना ही रोटी खा लेती है। इसीलिए हम दरिद्र हैं। ब्राह्मण पर उसकी बातों का कोई प्रभाव नहीं होता था।

धीरे – धीरे उसकी पुत्री बड़ी होने लगी। वह अत्यन्त नियम – धर्म वाली थी। प्रातःकाल उठकर, नहा – धोकर विष्णु भगवान की पूजा किया करती थी। प्रतिदिन जाते समय मुट्ठी भर जौं के दाने ले जाया करती थी, और रास्ते में उन्हें बोते – बोते जाती थी। जब वह विद्यालय से लौटकर आती थी, तो वह जौं के दाने सोने के दानों

में परिवर्तित हो जाते थे। एक दिन उसने विष्णु भगवान से प्रार्थना की कि हे भगवान ! आप मेरे जौं के दानों को सोने का बना देते हैं। यदि मैं सच्चे ह्रदय से आपकी पूजा करती हूँ, तो आप मुझे सोने का सूप दे दीजिए। भगवान ने उसकी प्रार्थना सुनकर उसे सोने का सूप दे दिया।

वहाँ का राजा अपने पुत्र के विवाह के लिए अत्यन्त चिन्तित था। क्योंकि राजकुमार को कोई भी कन्या पसन्द नहीं आ रही थी। एक दिन राजा ने राजकुमार से कहा – बेटा तू नगर भ्रमण करके आ। जो भी कन्या तेरे मन को भाएगी बता देना। मैं उसी के साथ तेरा विवाह करूँगा। नगर में घूमते – घूमते राजकुमार ब्राह्मण के घर के सामने पहुँचा। उस समय ब्राह्मण की कन्या सोने के सूप में सोने के जौं फटक रही थी। वह अत्यन्त रूपवती थी। उसे देखते ही राजकुमार ने मन ही मन निश्चय किया कि यदि मैं विवाह करूँगा तो इसी से, अन्यथा नहीं करूँगा।

महल में आकर राजकुमार चुपचाप लेट गया। राजकुमार को लेटा देखकर राजा चिन्तित हो उठा। उसने मंत्री को बुलाकर कहा – जाकर राजकुमार से पूछो – वह आराम करने के लिए लेटा है या परेशान होकर। मंत्री ने जाकर राजकुमार से पूछा – राजकुमार ! महाराज पूछ रहे हैं कि आप आराम से सो रहे हैं अथवा परेशान होकर। राजकुमार उठकर राजा के पास गया। राजा ने पूछा – बेटा क्या बात है? कोई कन्या पसन्द आई। राजकुमार ने कहा – हाँ आई, महाराज जो कन्या सोने के सूप में सोने के ही जौ फटक रही थी, मैं उसी के साथ विवाह करूँगा। राजा ने तुरन्त मंत्री को बुलाकर कहा – नगर में जाकर सोने के सूप में सोने के जौं फटकने वाली कन्या का पता लगाओ। कन्या के पिता से राजकुमार के मन की बात कहकर उसकी कन्या से राजकुमार के विवाह की बात पक्की करके आओ।

पूछते – पूछते मंत्री ब्राह्मण के घर पहुँचा। ब्राह्मण ने उन्हें आदरपूर्वक बिठाया और उनके आने का कारण पूछा। मंत्री ने ब्राह्मण से राजकुमार के हृदय की बात कह दी और राजा के आदेश को बताते हुए कहा – महाराज ने कहा है कि विवाह की बात पक्की करके आना। ब्राह्मण हाथ जोड़कर बोला – महाराज ! मैं तो निर्धन ब्राह्मण हूँ, भला आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ? मेरे पास तो अपनी कन्या को देने के लिए कुछ भी नहीं है। मंत्री ने कहा – तुम उसकी चिन्ता मत करो, बस कन्या देने के लिए हामी भर दो। ब्राह्मण बोला – मेरी कन्या रूप – गुणवाली है, यदि राजकुमार को पसन्द है और उसके भाग्य में राजसी सुख का योग है, तो मैं मना करनेवाला भला कौन हूँ? इस तरह राजकुमार के साथ ब्राह्मण की बेटी के विवाह की बात पक्की करके मंत्री लौट आया।

मंत्री ने आकर यह खुश खबरी राजा को सुनाई। विवाह का शुभ मुहूर्त तय किया गया। राजकुमार की बारात निर्धन ब्राह्मण के घर पहुँची और उसकी पुत्री का विवाह राजकुमार से हो गया। विदा होकर कन्या अपने ससुराल चली गई। जब ब्राह्मण की बेटी अपने ससुराल चली गई, तो ब्राह्मण के घर में पहले जैसी दरिद्रता व्याप्त हो गई। जब बेटी विवाह के बाद द्विरागमन के लिए मायके आई, तो उसे वहाँ की दुर्दशा देखकर बहुत बुरा लगा। उसने अपनी माँ को समझाते हुए कहा – तू प्रातः उठकर नहा – धोकर विष्णु भगवान की पूजा किया कर। किन्तु उसकी माँ ने बेटी की बातों पर ध्यान नहीं दिया। एक – दो दिन में बेटी अपने ससुराल चली गई।

एक दिन ब्राह्मण अपनी बेटी से मिलने उसके ससुराल आया। बेटी ने अपने पिता से घर की कुशल – क्षेम पूछी। ब्राह्मण ने कहा – बेटी जैसा तू देख गई थी, वैसा ही है। बेटी ने रुपये – पैसे देकर पिता को घर भेज दिया। कुछ दिन तो ठीक से व्यतीत हो गए, उसके बाद फिर पूर्ववत् ही हो गये। कुछ दिनों बाद ब्राह्मण पुनः बेटी

के घर गया। बेटी ने पिता के उदास मुख को देखकर कहा – पिताजी, आप ऐसा कीजिए, माँ को यहीं ले आइए। मैं माँ को व्रत की विधि बताकर व्रत कराऊँगी, तो ईश्वर की कृपा से सब़ ठीक हो जाएगा।

ब्राह्मण को बेटी की बात पसन्द आई। वह घर गया और ब्राह्मणी को साथ लेकर बेटी के घर आ गया। बेटी ने माँ को पुनः समझाया, पर उसने बेटी की बात को अनसुना कर दिया। वह प्रातःकाल उठकर बेटी के बच्चों की जूठन खा लेती थी। एक दिन बेटी ने अपनी माँ को कोठरी में बन्द कर दिया, जिससे कि वह मुँह जूठा न कर सके। प्रातःकाल उठकर उसने माँ को भी अपने ही साथ स्नान कराया, व्रत कराया और पूजा की विधि सिखाई। प्रतिदिन ऐसा करते – करते ब्राह्मणी को स्नान की आदत पड़ गई। पूजा – पाठ और व्रत करना उसे रुचिकर लगने लगा।

बेटी के घर रहते – रहते जब बहुत दिन हो गये, तो एक दिन ब्राह्मण – ब्राह्मणी अपनी बेटी को आशीर्वाद देते हुए अपने घर लौट आए। यहाँ आकर भी ब्राह्मणी बेटी के बताए अनुसार ही पूजा – पाठ व्रतादि करती रही। विष्णु भगवान की कृपा से उनके घर का दारिद्र्य दूर हो गया। इसी तरह दिन व्यतीत होते रहे, अन्त में दोनों इस लोक का सुख भोगकर विष्णु लोक चले गये।

सार :

निम्न कथा में बताया गया है कि यदि हम धर्म का पालन करते हैं तो उसे पूरी निष्ठा से करना चाहिए क्योंकि हम कभी – कभी भावनाओं में बहकर हम खुद पर काबू नहीं रखते और जिससे हमारे गलत कर्मों का फल पूरे परिवार को भुगतना पड़ता है।

बेटी धर्म का पालन पूरी निष्ठा से करती है तो भगवान उसके भाग्य में सुख देते हैं और वहीं दूसरी ओर माँ सिर्फ अपने जीवन को जीती है भगवान ने हमें बनाया है तो उनको हमें कभी नहीं भूलना चाहिए मगर उसकी माँ यह सब नहीं करती इसलिए उनके घर में दारिद्र्य रहता है।

पर जिस दिन उसकी माँ यह समझ जाती है उस दिन से वह भी सुख के दिन व्यतित करने लगते हैं।

नाग राजकुमार

एक राजा था, उसकी एक रानी थी। उनका विवाह हुए जब बहुत वर्ष हो गये, किन्तु फिर भी कोई सन्तान नहीं हुई, तो ब्राह्मण को बुलाकर अपनी जन्म कुण्डली दिखाकर पूछा – यह बताइए कि हमारे भाग्य में सन्तान है या नहीं? ब्राह्मण ने कहा – महाराज ! यदि मैं आपको सन्तान प्राप्ति का उपाय बता दूँ, तो आप मुझे क्या देंगे? राजा बोला – यदि हमारी सन्तान हो गई, तो मैं तुम्हें अपना आधा राज्य दूँगा। ब्राह्मण को आता कुछ भी नहीं था। उसने राजा को प्रसन्न करने के लिए यूं ही कह दिया कि कुण्डली के अनुसार आपको पुत्र प्राप्ति होनी चाहिए। राजा ने कहा ठीक है, पर उपाय क्या है? ब्राह्मण बोला – मैं जैसा कहूँ, आप वैसा ही कीजिएगा। राजा ने कहा – बताओ क्या करना है? ब्राह्मण ने कहा – सर्वप्रथम तो आपको मेरी बताई हुई दूती लानी होगी। राजा ने वैसा ही किया।

ब्राह्मण ने दूती से कहा – तू रानी के पेट में धोती लपेटकर धीरे – धीरे उसे बढ़ाते रहना, जिससे कि राजा को लगे कि रानी माँ बनने वाली है। ब्राह्मण ने रानी से कह दिया कि ऐसा करने से पुत्र ही होगा, किन्तु किसी से भी यह बात मत कहना। ब्राह्मण ने दूते से कहा – यदि तूने यह बात किसी को बताई और राजा को पता चल

गया, तो वह हमारी गर्दन काट देगा। राजा से उसने पहले ही कह दिया था कि नौ महीनों तक रानी का मुँह न देखें।

अब रानी के प्रसव का समय आया। राजा ने दूती से कहा – जो भी बच्चा होगा, तू मुझे सूचना देना। राजा को अत्यन्त प्रसन्नता हो रही थी और वह रानी के लिए चिन्तित भी था। बेचैनी से वह अन्दर – बाहर टहल रहा था। बहुत देर के बाद बच्चा हुए बिना ही दूती ने अन्दर से ही आवाज लगाकर कहा – रानी का बेटा हुआ है। यह सुनकर रानी चकित रह गई। उसने कहा – तू झूठ क्यों बोल रही है? दूती बोली – रानी जी आप चुप ही रहिएगा। यदि आपने कुछ कहा तो महाराज हम तीनों की गर्दन काट देंगे। रानी डरकर चुप हो गई। जब राजा को पुत्र के होने की सूचना मिली, तो वह उसे देखने के लिए अन्दर आने लगा। ब्राह्मण ने उसे देहरी में ही रोककर कहा – महाराज आप बारह वर्ष तक पुत्र का मुँह नहीं देख सकते। यदि आपने छिपकर भी उसे देखने का प्रयत्न किया, तो उसकी मृत्यु हो जाएगी। बारह वर्ष में जब उसका विवाह होगा, तब आप उसका मुँह देखिएगा। ब्राह्मण ने बच्चा होने से पहले ही कहा था जैसा मैं कहूँ, वैसा ही कीजिएगा। राजा ने ब्राह्मण की बात मान ली। उसने सोचा – जब इतने वर्षों तक बच्चे का मुँह नहीं देखा। वहाँ बारह वर्ष और सही।

इसी तरह बारह वर्ष पूरे हो गये। अब ब्राह्मण ने राजा से कहा – महाराज राजकुमार के लिए कन्या ढूँढ़िए। रानी ने अब भी राजा से कुछ नहीं कहा। क्योंकि उसे डराया था कि यदि राजा को सत्य का पता चला, तो वह हम तीनों को काट देगा। अतएव रानी चुप ही रही। एक दिन राजा ने ब्राह्मण से कहा – राजकुमार के लिए कन्या ढूँढ़ ली है। कन्या के घरवालों ने राजा से कहा – हमें लड़का दिखाइए, तो राजा ने कहा – लड़के में कोई कमी नहीं है, वह आप सभी को पसन्द आएगा। विवाह के दिन ही उसे देखिएगा। राजा की बात कन्या पक्ष ने विश्वास कर लिया। विवाह का

मुहूर्त निश्चित कर पूरे राज्य में और पड़ोसी राज्यों के राजाओं को निमन्त्रण भेजा गया।

जैसे – जैसे विवाह की तिथि निकट आ रही थी वैसे – वैसे ब्राह्मण, रानी और दूती की चिन्ता भी बढ़ती जा रही थी। विवाह के दिन तीनों लोगों ने वर का डोला सजाया और उसके अन्दर गणेश जी की मूर्ति रख दी। अब बारात भी कन्या के घर की ओर चल दी। रास्ते में थकान मिटाने के लिए एक स्थान पर बारात रुकी। डोली को आम के दो वृक्षों के बीच में रखा गया। बाराती आराम से चाय–पानी पीने लगे। आम के वृक्ष में नाग – नागिन का जोड़ा रहता था। ब्राह्मण ने डोले के अन्दर झाँककर पूछा – चाय पियेंगे? मूर्ति भला क्या उत्तर देती? यह सब नाग – नागिन देख रहे थे। उन्होंने ब्राह्मण को जब यह करते देखा, तो उन्हें सब बातें समझ आ गयीं। नागिन ने नाग से कहा – देखो, यदि बात पकड़ी गई तो बेचारे तीनों मर जाएँगे। तुम ऐसा करो, लड़के का रूप धारणकर डोले में बैठ जाओ। जब बारात लौटकर आएगी तो तुम उतर जाना। नागिन की बात मानकर नाग ने लड़के का रूप धारण किया और डोले में बैठ गया। राजा ने ब्राह्मण से कहा – राजकुमार न तो चाय पी रहे हैं और न पानी, क्या बात है? एक बार फिर पूछकर आओ। ब्राह्मण ने जैसे ही डोले के अन्दर झॉका, तो उसे मूर्ति के स्थान पर दूल्हे को देखकर अवाक् रह गया। झट से बोला – हाँ महाराज ! राजकुमार पानी माँग रहे हैं। राजकुमार को पानी पीलाकर बारात आगे को चल दी।

थोड़ा आगे जाकर हारों ने कहा – महाराज डोला तो बहुत भारी हो गया है। अब हमसे आगे नहीं ले जाया जाएगा। राजा ने कहा – तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया? घर से यहाँ तक ले आए और अब कह रहे हो, डोला भारी हो गया। कहारों ने कहा – महाराज हम बिलकुल ठीक कह रहे हैं, अब डोला पहले से बहुत भारी हो

गया है। राजा ने विनम्र होकर कहा – मैं तुम्हें पैसा और दूँगा, तुम धीरे – धीरे ही चलो, पर चलो। कहारों ने कहा – ठीक है महाराज, पर दो – तीन आदमियों को कंधा लगाने के लिए भेज दीजिए। जब चार पाँच लोगों ने कंधा लगाया तब कहीं डोला कन्या के घर तक पहुँचा। वहाँ पहुँचकर जब राजकुमार को डोले से बाहर लाया गया, तो राजा ने अपने पुत्र को देखते ही आलिंगनबद्ध कर लिया और अपना राज्य ब्राह्मण को दे दिया।

राजकुमार के साथ राजकुमारी का विवाह हो गया। जब बारात घर वापस आ रही थी, तो रास्ते में उसी स्थान पर पहुँचकर डोले को आम के दो पेड़ों के बीच रखकर बाराती थकान मिटाने बैठ गये। नाग डोले से उतरकर अपने वास्तविक रूप में आकर नागिन के पास चला गया। नाग को देखकर नागिन बोली अरे ! तुम तो आ गए अब क्या होगा? घर पहुँचकर भी तो सब वर – वधू को देखने आएँगे। तुम फिर से राजकुमार का रूप धारणकर डोले में बैठ जाओ। जब भी कोई तुम्हें मारे या तुम्हें कोई परेशानी हो, तो तुम मुझे याद कर लेना। मैं तुम्हारा साथ देने पहुँच जाऊँगी। नाग ने राजकुमार का रूप धारण किया और जाकर डोले में बैठ गया। खा – पीकर जब थकान दूर हो गई, तो बारात चल दी।

राजमहल में रानी और दूती दोनों रोती ही रहीं। सभी रानी से कह रहे थे – आपकी तो बहू आ रही है। आपको तो प्रसन्न होना चाहिए, आप रो क्यों रही हैं? क्या बात है? दूती बोली – महारानी जी के सिर में दर्द हो रहा है। उन्हीं को देखकर मुझे भी रोना आ रहा है। क्योंकि सभी लोग तो बारात में गये हैं, अब रानी जी को दवा भी कौन देगा। वे लोग इसी तरह बातचीत कर ही रहे थे कि तब तक बारात भी आ पहुँची। विवाह के सभी कार्य निर्विघ्न भली – भाँति पूरे हो गये। नाग राजकुमार के रूप में ही रहने लगा। वहाँ रहते – रहते जब उसे छः – सात माह हो गए, तो नागिन

चिन्तित हो उठी। उसने सोचा – दूसरे की भलाई के लिए मैंने अपना घर उजाड़ लिया। नाग तो मुझे बिलकुल ही भूल गया। वह नाग को लाने के लिए महल की ओर चल दी। नाग राजकुमार अपनी दुल्हन के साथ राजमहल की तीसरी मंजिल में रहता था। आधी रात में नागिन ढूँढ़ते – ढूँढ़ते जब उनके कमरे में पहुँची, तो उसने देखा – दोनों गहरी नींद में सो रहे थे। नागिन सोचने लगी – यदि मैं राजकुमार को डस लूँ, तो मैं विधवा हो जाऊँगी। यदि रानी को डसती हूँ, तो इसके माता – पिता रोएँगे। नागिन दुविधा में पड़ गई। अन्ततः उसने निश्चय किया मैं प्रातः सभी के सामने इस रहस्य को खोल दूँगी। यह सोचकर नागिन उसी पलंग पर एक ओर सो गई।

प्रातः उठते ही उसने सोचा – मैं नागिन हूँ। यदि किसी ने मुझे देख लिया तो मार डालेंगे। अतः मुझे मनुष्य रूप में आ जाना चाहिए। वह यह सोच ही रही थी कि तब तक राजा ने जलती हुई लकड़ी से उस पर प्रहार कर दिया। क्योंकि दूती ने राजा को पहले ही सूचना दे दी थी कि राजकुमार के पलंग पर नागिन है। यद्यपि हड़बड़ाहट में राजा ने नागिन पर जलती लकड़ी से प्रहार कर उसे मार डाला। किन्तु बाद में उसका मन शंकित हो गया। उसने सोचा – लोग कहते हैं कि नाग – नागिन को मारने से पाप लगता है, न जाने अब क्या होगा? सबने कहा – आपने राजकुमार की जीवन रक्षा के लिए उसे मारा है। अतः इसमें कोई पाप नहीं है। अब इसे उठाकर बाहर फेंकवा दीजिए। राजकुमार ने कहा – नहीं – नहीं इसे फेंकने से अच्छा इसे मैं दफना देता हूँ (राजकुमार ने नागिन को पहचान लिया था)। नागिन को डोली में रखकर ले गये और राजकुमार ने उसे दफना दिया। अब नाग निश्चिन्त होकर राजकुमार के रूप में ही रहने लगा।

सार :

इस कथा में राजा ने ब्राह्मण पर भरोसा करके बारह वर्ष तक अपने बेटे का मुँह नहीं देखा क्योंकि राजा को अपना वंश आगे बढ़ाना था, परन्तु ब्राह्मण ने राजा के इस विश्वास का फायदा उठाया तथा झूठ कहा कि आपका पुत्र हो गया है तथा उसको बारह वर्ष से पहले देखोगे तो उसकी मृत्यु हो जायेगी।

पर भगवान का चमत्कार हुआ तथा एक नाग ने लड़के का रुप धरा तथा वह राजा का पुत्र बनकर रहने लगा।

इस प्रकार ब्राह्मण की तपस्या पूरी हुई राजा को पुत्र मिल गया तथा राज्य को एक राजकुमार मिल गया।

यह एक श्रृद्धा और अंधविश्वास भरी मिली – जुली कथा है।

संदर्भ सूची

१. डॉ प्रभा पत – कुमाऊँनी लोक क्था – पृ.सं. १ से १८६